इस तरह चलो

गिरिजा शंकर पाठक 'गिरिजेश'

विकास प्रकाशन,
4, चौधरी क्वार्टर्स, स्टेडियम रोड़, बीकानेर

ISBN - 181 - 902398 - 7 - 21

प्रकाशक
विकास प्रकाशन
4, चौधरी क्वार्टर्स, स्टेडियम रोड,
बीकानेर – 334001
दूरभाष – 2541508

संस्करण – 2005

मूल्य
सौ रूपये

कम्पोजिंग
स्वाति कम्प्यूटर्स
धोबी–धोरा, सूरसागर के पास, बीकानेर

मुद्रक
कल्याणी प्रिन्टर्स, बीकानेर

ISS TARAHA CHALO
By: Girija Shankar Pathak 'Girijesh'
Rs. 100.00

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन

कवि कर्मकुशल श्री गिरिजाशकर 'गिरिजेश' की अर्थ गौरवालकार अलंकृता, स्फुट पद विन्यास समन्विता कविता कादम्बिनी अपने कमनीय कलेवरीय मनोनुकूल कलित कल्पना दुकूल से दिग्दिगन्त आच्छादित करती, भावना जगत् को अनुप्राणित कर द्रवित होती मलापहा त्रिपथगा के रूप मे रूपायित है ।

नैजिक निर्मोक विनिसृता, भवाटवी भाविता यह एकोऽहम् बहुस्याम उक्ति को चरितार्थ करती नानाविध शाखाओं — प्रशाखाओं मे विभक्त जनमानस की उदात्त भावनाओ को आप्लावित करती हुई राष्ट्रीय रत्नाकरोन्मुख दृष्टिगोचर हो रही है ।

यह सत्य है कि जब कोई अवकाश के क्षणो मे एकान्तवासी होता है या आनुषंगिक घटनाएँ मर्म स्पर्शिनी होती है — ऐसी स्थिति मे भावाधिक्य के कारण अन्तर्जगत मुखर हो उठता है तब रचनाधर्मिता में कल्पनाशीलता एवम् सम्प्रेषणीयता का समन्वित रूप ही स्फुट कविता अथवा प्रबन्धात्मकता को जन्म देता है जहाँ उसकी वैयक्तिकता का दर्शन अनुशासनपूर्ण शासन मे दिखाई देता है।

कवि का अर्थ है स्रष्टा और ब्रह्मा जो निर्माण का प्रतीक है न कि विध्वस का । अत हमारी भावना भी 'रामादिवत् प्रवर्तितव्यम्' की रही है न कि रावणादिवत् की । यही कारण है कि 'कवेर्भावम् काव्यम्' भी सत्यम–शिवम और सुन्दरम का उद्घाटन रहा है । भारतीय आचार्यों ने भी काव्यम् यशसेऽर्थ कृते व्यवहार विदे शिवेतरक्षतए सद्य पर निर्वृत्तए कान्ता सम्मिततयोप देशयुजे'' का डिम–डिम घोष कर काव्य की इयत्ता इसी मे मानी है कि वह यशप्रदायी, अर्थप्रदायी, व्यवहारविद, अशुभ परिहारार्थ तत्पर कि बहुना यशस्विनी भार्या के समान समीचीन वर्त्मानुगामी होने की सलाह भी दे । इन सब मानदण्डों को सामने रख अन्वय–व्यतिरेक मे पडा दुर्गम पथानुगामी कवि पौन.पुन्येन यह सोचने के लिए भी बाध्य होता है कि आचार्य विश्वनाथ विहित 'वाक्यम् रसात्मक काव्यम्' पथ का पथिक बना जायें या आचार्य केशव के — यदपि सुजाति सुलच्छनी सुबरन सरस सुवृत भूषन बिनुन विराजई कविता वनिता मित्त का अनुयायी बनकर वह अपने गन्तव्य पर पहुंचे । भाव और कला पक्ष का निसर्गत: समन्वय ही इस दिशा मे श्रेयस्कर हो सकता है, ऐसी मेरी मान्यता है । वर्ण्य विषय की विशदता के कारण महतीय महाकाव्य में मानदण्डो का महापाक सहज सभाव्य है किन्तु स्फुट कविता (मुक्तक) काव्य की सीमित परिधि जो आज

का विवेच्य विषय है, जिसमें पद, गीत, दोहा, सोरठा, बरवै, मुक्तक, ग़जल और रूबाई आदि का समावेश है जहा नुम्यकीय व्यक्तित्व वाले धीरोदात्त नायक का अभाव होता है, सर्गादिश बन्धन श्लथ होता है और कथा मे अनुस्यूति नहीं होती वहा अपरिमित प्राप्ति की कामना चारित्रिक परिमितता को व्यंजित करता है । यह तो हुई बात कविता के सैद्धान्तिक पथ की जो आदर्शपरक है । सत्य तो यह है कि कवि अपने समय का प्रतिनिधि होता है । सम–सामयिक घटना प्रवाह मे स्वय को प्रवाहित किए बिना वह नहीं रह सकता क्योंकि – यह उसकी विवशता है, यह उसकी यथार्थता है, रचना रज्जु के उभय छोर के सम्मुखीकरण मे अपने आपको वह इसप्रकार वलयित कर लेता है जहाँ से वृत्त परिधि की दूरी प्रत्येक दशा मे समान रहती है ।

प्रसगत प्रस्तुत पाडुलिपि की प्रतोली मे पदार्पण करते ही यह तथ्य सामने आने लगता है कि व्यष्टि परक भावना भवित दृष्टिकोण वाला कवि प्रयाणगीत एवम् उद्बोधनपरक कविताओ को गाता–गाता समष्टि सीमाओं मे समाहित हो गया है कि बहुना अन्तर्राष्ट्रीयता का गायक बन गया है । प्राकृतिक उपादानों के वर्णन मे मानवीकरण द्वारा तादात्म्य स्थापित किया गया है। राष्ट्रीय कविताओं के द्वारा जन–जीवन मे लोकोत्तर जोश भरने के साथ–साथ कुछ कर गुजरने की लालसा प्रमुखतया अभित· दर्शनीय है । अन्योक्तियो में दंश है, वे सटीक हैं ।

पुस्तक 'इस तरह चलो' को आद्योपान्त अवलोकन के पश्चात् मै उन कुछ स्थलों का दिग्दर्शन कराना अपना दायित्व समझता हूँ जिनका मेरे मानस पटल पर चिर स्थायी प्रभाव पडा है । सरस्वती वन्दना के पश्चात 'युगबोध' मे जहा कवि वर्तमान की विभीषिका से विचलित हो उद्घोष करता है –

श्वास–श्वास मे भरी घुटन है, पग–पग पर प्रतिशोधन है ।
दिल की हर धड़कन आतंकित यह कैसा उद्बोधन है ।।

वहीं ''इस तरह चलो'' पुस्तकीय शीर्षक मे कवि सचेत हो जाता है, प्रकृतिस्थ हो जाता है, उसका स्व जाग उठता है और वह कह उठता है –

इस तरह चलो कि राह मे हार कर भी जीत पा सको ।
दर्द दिल मे है तो क्या हुआ ? मुस्करा के गीत गा सको ।।

यहाँ कवि का सन्देश है **"Never finish a negative statement, reverse it immediately and wonders will happenin your life."**

साप्तपदीन पडाव – व्यष्टिपरक चिन्तन का परिपाक मेरे गीत, जिन्दगी, प्रकृति और पुरूप, गजल बनती है, बन्धुत्व की शहनाई, और क्या किया जाय, मे पूर्ण रूप से हुआ है । यथा–

नेह हमको दिया है किसी ने उनको विश्वास मैंने दिया है ।
जब भी पतझड़ में तरू लड़खड़ाए उनको मधुमास मैंने दिया है ।

—

चल कर मैं निष्काम डगर पर करता जाऊँ काम जी,
मेरे पथ को आलोकित करना है मेरे राम जी

— बन्धुत्व की शहनाई

समष्टिपरक चिन्तन— इन कविताओं मे कोई कहीं न लूटे, प्यार दे, आह्वान समष्टि का, सुरभित उद्यान और दिल क्यो दूर हो आदि शोभनीय है । यथा —

वर्षो का श्रृगार किसी का पल मे कहीं न रूठे ।
सजा—सजाया गुलशन अपना कोई कहीं न लूटे ।।

— कोई कहीं न लूटे

सबमे स्नेह सकलित होना मानव का दस्तूर है।
आपस मे मिलते रहते है फिर भी दिल क्यो दूर है ।।

— दिल क्यो दूर है

उद्बोधनार्थ एवम् प्रमाण गीत परक — इन गीतो मे कदम—कदम बढ़ता चल राही, लाडेसर, मानवता का विनाश, श्रम कण, स्नेह सरिता आदि कविताए अच्छी बन पड़ी है ।

अपना ही पुरूषार्थ पथिक को मजिल तक पहुचाता है
भाग्य भरोसे जो बैठा है राहो मे रह जाता है ।।
मजिल को किसने पाया है बैठ विटप की छाह मे ।
कदम—कदम बढ़ता चल राही मत रूकना तूँ राह में ।।

— प्रयाणगीत

कभी भँवर मे क्लेश कलह के नाव नहीं फँसने देना ।
लगा प्राण की बाजी इसको मीत किनारे तक खेना ।।
कोटिक लाल तिहारे सग मे औ कोटिक ललनाएँ है ।
हे भारत माँ के लाड़ेसर तुमसे सब आशाएँ हैं ।।

— लाडेसर

राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय भावना भवित चिन्तन— इनमे प्यारा हिन्दुस्तान, भारत माता के सपूत, धरा महान, मेरा हिन्दुस्तान, भयाक्रान्त विश्व, विश्व बन्धुता, वतन के शहीद तथा ये मेरी जमीं है, आदि ऐसी कविताए है । राष्ट्र कवि का पद दिलाने में समर्थ है । यथा —

चन्दा बदले सूरज बदले, बदले यह जग सारा ।
देश धर्म पर मर मिटने का हो सकल्प हमारा ।।

— सकल्प

भारत माता के सपूत तुम भरमाए से क्यो लगते हो ।
इस भू पर पैदा होकर भी परजाए से क्यों लगते हो ।।

— भारत माता के सपूत

प्राकृतिक उपादानो मे साधारणीकरण परक — इन कविताओं में गगन, मैं बादल हूँ, मेघ सब कहाँ विलीन हो गए, बरखा रानी आदि कविताए अच्छी बन पडी है ।

मैं गगन हूँ देखता सब कुछ मगर
हर जगह हर बात पर बोला नहीं करता ।

— गगन

मैं बादल हूँ मुझको तो सारी धरती से प्यार है ।
हित–अनहित समझा जावे तो यह जीवन का सार है ।।

— मैं बादल हूँ

ग्राम्य प्रेमपरक चिन्तन — महानगरीय चाक चक्य से चुधिआई चक्षुओ मे सरसता सचार के लिये कवि गावो की तरफ उन्मुख है । यथा —

लोग भागे है क्यों कर नगर की डगर,
गॉव की भी गली कम सुहानी नहीं ।
गॉव पनघट पर छम छम करे पयजनी,
वैसी छम छम शहर बीच आनी नही ।।

— ग्राम्य वर्णन

पीली–पीली रग–बिरगी तितली की टोली है ।
लगे प्रात को ऐसी लाली ऊषा ने घोली है ।।
नवल भोर की सुखद पवन मे तुमको सैर करावे ।
खेत हमारा कितना प्यारा आओ तुम्हे दिखावे ।।

— हमारा खेत

इसी प्रकार मधुमास और मेघ सब कहॉ विलीन हो गए आदि ऐसी कविताएँ है जो कविवर पन्त जी के ग्राम्य वर्णन की याद दिलाती है ।

प्रगति के बढते चरण — इन कविताओ के द्वारा कवि देश मे हो रहे निर्माणो से जन समुदाय को परिचित कराना चाहता है तभी तो चम्बल माता, इन्दिरा गाधी नहर की स्तुति करता दिखाई दे रहा है ।

आचार्य कुन्तक ने "वक्रोक्ति. काव्य सेवितम्" द्वारा रचना मे वाग्वैदग्ध्य को सराहा है । यहा आमत्रण उल्लुओं का, विश्वास और मेघ सब कहां विलीन हो गए आदि ऐसी कविताएँ देखने को मिली जहॉ कवि की विदग्धता दर्शनीय है।

दादुरो टर–टर करो अब समाधि तोड़कर,
साँप के घर अब तुम्हारे सर बनाए जा रहे हैं ।

कवि नें इस कविता मे जमकर वैश्वीकरण और उदारीकरण पर प्रहार किया है । वैदेशिक आक्रमण, शताब्दियों की दासता तज्जन्य विगर्हणा और दैन्य को देखते हुए भी आज भारतीय सर्वकार परतत्रता के पाशतत्र मे पारित परिवेष्ठित होने के लिए न जाने क्यो बद्धपरिकर है ? यह प्रश्न है आमत्रण उल्लुओं का ।

मेंघ सब कहाँ विलीन हो गए–

पनघटो को पी गया है पींवणा मूख सींवणा महीन हो गए
काकड़ो पर आकड़े खड़े–खड़े समग्र दृश्य देख लहलहा रहे ।।
दुष्ट देखकर किसी को ज्यो दु खी मुस्करा रहे हैं गीत गा रहे है ।

अनावृष्टि का कितना सजीव वर्णन हैं । अमित दुर्भिक्ष का ताण्डव नृत्य हो रहा है, शालीनता तिरोहित हो गई है । ऐसी स्थिति मे भी आकड़े (अर्क) मदार वृक्ष दुष्ट व्यक्तियों के सदृश सीना ताने सीमान्त पर ब्रह्मानन्द सहोदर रसानुभूति का अनुभव कर रहे है । इन चन्द पक्तियों में एक स्थान पर ही भाव पक्ष और कला पक्ष की सम्पूर्ण बारीकियां आप देख सकते है – मेंम सब कहां विलीन हो गए अर्थात् क्या सभी दानदाता मर गए ? व्यजना शब्द शक्ति का उदाहरण है । पनघटो को पी गया है पींवणा मे लक्षणा शक्ति के साथ–साथ अनुप्रास । कांकड़ों पै आकड़ में श्लेष अलकार । कांकड़ो – सीमा और ककड, आकडे उन्नत वक्ष स्थल और (अर्क) मदार वृक्ष । आकड़ो की उपमा दुष्ट व्यक्तियो से कर उपमा अलंकार का निर्वहन और कुल मिलाकर मानवीकरण और न जाने कितनी अभिव्यजनाएँ है ।

कविता का कला पक्ष यद्यपि कवि को अभिप्रेत नहीं है तथापि तथापि इसी तरह इसी तरह सहजतया आए कुछ अन्य स्थलो को भी देखा जा सकता है – "बाड़ ही खेत को खा न जाए कहीं, उन हवाओ से भगवन बचाना हमें"– मुहावरा, प्यार दे मे "चादनी चाद से मुस्कराती हुई, सर्वदा चाद की गोद मे ही सजे" – पदलालित्य नव वर्ष ।

भाषा – भाषा के विषय में कवि का दृष्टिकोण बड़ा ही उदार है । सस्कृत निष्ठ हिन्दी के साथ–साथ ब्रज, अवधी भोजपुरी, उर्दू अग्रेजी और राजस्थानी से किंचिन्मात्र भी परहेज नहीं है । "मष स्थाने भाष कुर्यात् छन्दो भंग नकारयेत" सिंद्धान्त को अपनाते हुए कवि ने दामन को दाम, आह्वान को आह्वान, वात को वातायन और स्नेहिल को सनेहिल रूप मे उपस्थापित किया है ।

निष्कर्ष – नभचारी को पतन और जल विहारी को निमज्जन का भय रहता है किंतु हमारा कवि जमीन से जुड़ा है, यह धरती का गायक है । अत इसे पतन

का भय नहीं है । कहा भी है "भूमौस्थितस्य पतनाद्भयमेव नास्ति" प्रस्तुत पुस्तक "इस तरह चलो" मुक्तक काव्य की उत्क्रान्त उक्तियों को समेटे समीचीनता का सन्देश देती है । "नान्या पन्था विद्यतेऽनया" इसके सिवाय और कोई रास्ता चलने के लिए नही है । यह पुस्तक पठनीय एव सग्रहणीय है । कवि धन्यवादाई है ।

समीक्षक
आचार्य उमाशकर पाण्डेय
एम ए , बी एड., साहित्य रत्न
प्रधान
आर्य समाज पवनपुरी,
बीकानेर

बीकानेर
गुरू पूर्णिमा २०५७

मात शारदे

नइया पार तूँ लगा दे मात शारदे ।
कनक मुकुट शोभे हार रतनारी,
भम्य माल पुस्तक युगल कर भारी ।
लगन चरण कमलन नें लगा दे ।।
मात शारदे नइया पार तूँ लगा दे ।।

आसन कमल मात हंस के सवारी,
विस्मित जग शोभा निरखि खरारी ।
एक मात्र नजर मे विघन मिटा दे ।।
मातु शारदे नइया पार तूँ लगा दे ।।

अद्‌भुत तान तेरी लगती सुहावनी,
मात वीन वादिनी तूँ जग को लुभावनी ।
काव्य मे सरस रस धार तूँ बहा दे ।।
मात शारदे नइया पार तूँ लगा दे ।

तेरे विन काव्य रीत गीत को बतावे,
ऊँच नीच मारग समझ नहिं आवे ।
बालक अबोध को सुमारग बता दे ।।
मात शरदा नइया पार तूँ लगा दे ।।

मुझको तो मात तेरे चरणों की आशा,
दर्शन दे के मात मेट दे पिपासा ।
अपनी कृपा की एक झलक दिखा दे ।।
मात शारदे नइया पार तूँ लगा दे ।।

•

युग बोध

श्वॉस–श्वॉस में भरी घुटन है पग–पग पर प्रतिशोधन है ।
दिल की हर धडकन आतंकित यह कैसा उद्बोधन है ।।

प्रश्न चिन्ह है हर चौराहे उत्तर किया पलायन है,
यह कैसी गाथा है अपनी यह कैसी रामायन है ।
नजर–नजर बन गई जयद्रथ गली–गली दुर्योधन है ।।
श्वॉस–श्वॉस में भरी घुटन है.. .... ।।

रात उजाले की चादर में खुलकर फिरे बाजार में,
दिन बेचारा दफन हो गया जिन्दा किसी मज़ार में ।
असत सत्य नीलाम कर रहा यह कैसा उद्घोषन है ।
श्वॉस–श्वॉस में भरी घुटन है................. .... ।।

जिस योगी के चरणो मे यह शीष झुका आराधन को,
वह अपने पर धन्य हो गया देख सफल निज साधन को ।
सिंह स्याल पहचान कठिन है यह कैसा अनुमोदन है ।।
श्वॉस–श्वॉस में भरी घुटन है....... .... ।।

दीप जलेगा कब तक जिसमे स्नेह नहीं बाकी होगा,
मधुशाला की मधुरिम कलरव क्या वह बिन साकी होगा ।
काक कर रहे हंसो को प्रवचन कैसा सम्बोधन है ।।
श्वॉस–श्वॉस मे भरी घुटन है .... ।।



जब से तेरा प्यार खो गया

जब से तेरा प्यार खो गया, जिन्दगी का सार खो गया।
हिन्द से जापान तक तुम्हारी धाक थी,
तेरी सभ्यता से तो जहाँ आवाक थी ।
तूँ कहाँ पै थे कहाँ पै हो गए,
विश्व को जगाने वाले सो गए ।
वेद मंत्र का तेरा प्रचार खो गया,
जब से तेरा प्यार खो गया ।।

जिस तरह प्रवीणता बढी,
मनुष्य में मलीनता बढ़ी ।
चाँद तक पहुँच गए तो क्या,
इस धरा पे हीनता बढी ।
साम्यवाद का तेरा बाजार खो गया।
जब से तेरा प्यार खो गया ।।

राधिका सँवर नहीं सकी,
श्याम की न बन्सरी बजी ।
वैमनस्यता पनप गयी,
सबने प्रीत भावना तजी ।
कालिन्दी के कूल का करार खो गया,
जब से तेरा प्यार खो गया ।।

सुधा को बाँट कर गरल को तूने पिया है,
समाज त्राण को स्व अस्थि तूने दिया है ।
तुम्ही वतन की आन पे बन–बन मे घूमते,
तुम्ही वतन की शान में फाँसी भी चूमते ।
सम्प्रदायवाद मे कुमार खो गया ।
जब से तेरा प्यार खो गया ।।

•

इस तरह चलो

इस तरह चलो कि राह मे हार कर भी जीत पा सको ।
दर्द दिल में है तो क्या हुआ मुस्करा के गीत गा सको ।।

हो कर्म प्रेरणा का प्रस्फुटन फल की आस छोडकर चलो,
सुमार्ग कष्टकीर्ण होते हैं घर की आस छोडकर चलो,
नयन में बुद्ध सा नमन लिए दुश्मनों मे मीत पा सको ।।
इस तरह चलो कि राह मे हार कर भी जीत पा सको ।।

समेटना है तो समेट लो गर्द तूँ किसी गरीब का,
बॉटना है दर्द बॉट लो तूँ किसी भी बदनसीब का ।.
प्रखर हृदय उदारता लिए ऊँच नीच मे न कोई भीत पा सको ।
इस तरह चलो कि राह मे हार कर भी जीत पा सको ।।

बना सको तो प्रेम का न्यूट्रान बना के विश्व भर में छोड दो,
प्रसार पाशविक प्रवृति का मनुष्यता की राह मोड दो ।
पिरो प्रवर परार्थ भावना स्वयं को अनग्रहीत पा सको ।।
इस तरह चलो कि राह में हार कर भी जीत पा सको ।।

न आपदाओ में हो अश्रुधार सौख्य में न फूलना कभी,
बना दो स्वर्गधाम विश्व को न भक्ति भाव भूलना कभी ।
स्व जन स्वगृह सकल वसुन्धरा ठाम ठाम हीत पास को ।।
इस तरह चलो कि राह मे हार कर भी जीत पा सको ।





कुर्बानी

बेन्जामिन कुर्बानी तेरी कभी न खाली जायेगी ।
बरबर गोरों की बरबर सरकार मिटा दी जायेगी ।।

जब जब अत्याचार बढ़ा है धरती पर,
जुल्मों का अम्बार गगन पर छाया है ।
कोई लेकर ज्योति पुंज कर कमलो में,
तिमिर मिटाने इस अवनी पर आया है ।

दानवता के दमन नीति की नींव हिला दी जायेगी ।
बेंजामिन कुर्बानी तेरी कभी न खाली जायेगी ।।

जालिम गोरों से उन्मुक्त कराने को,
अब तो लाखों बेजामिन पैदा होंगे ।
काले गोरे का सब भेद मिटाने को,
एक–एक करके क्रमश. सैदा होगे ।

दक्षिण अफ्रीका वीरों की खान बना दी जायेगी ।
बेंजानिन कुर्बानी तेरी कभी न खाली जायेगी ।।

कथनी करनी में है फर्क जहाँ होता,
ऐसा शासन क्या है वह दुःशासन है ।
बाते प्रजातंत्र की करते हैं बोथा,
रंग भेद कायम है क्या अनुशासन है ।

गोरो के अरमानों मे अब आग लगा दी जायेगी ।
बेजामिन कुर्बानी तेरी कभी न खाली जायेगी ।

आने को होता है जब परिवर्तन तो,
धरा भोग वीरो का मांगा करती है ।
काली रूप प्रचण्डी का धारण करके,
मुण्डमाल गर्दन मे टागा करती है ।

दानवता को अब काली की भेंट चढा दी जायेगी ।
बेंजामिन कुर्बानी तेरी कभी न खाली जायेगी ।।

तूँ हँसते–हँसते झूल गया है फाँसी पर,
गुमराह जवानों में नव ज्योति जगाने को ।
तूँ शक्ति स्रोत बन हृदय–हृदय में समा गया,
अश्वेतों को अब नई दिशा दिखलाने को ।

आरती तुम्हारी सरस्वती के पुत्र उतारी जायेगी।।
बेंजामिन कुर्बानी तेरी कभी न खाली जायेगी ।।

कवियों की राखी है तूँने मर्यादा,
साख जमाई आज चन्द्रबरदाई की ।
शत–शत नमन हमारा है शहीद तुमको,
कुर्बानी देकर तूने अगुआई की ।

कवियो की भी कलम आज अंगार बना दी जायेगी ।।
बेंजामिन कुर्बानी तेरी कभी न खाली जायेगी ।।



भयाक्रान्त विश्व

यही है बात सुबह से यही है बात शाम से ।
थरथरा रहा है विश्व जिन्दगी के नाम से।।

आज हम विनाश के कगार पर खडे हुए,
अपनी जिद पै अपनी व्यर्थ बात पर अडे हुए,
अपने घर में ही गए हम दुआ सलाम से ।।
थरथरा रहा है विश्व जिन्दगी के नाम से।।

आग लग गई है क्यों आज दृष्टि दृष्टि को,
सर्वनाश करना चाहते हैं सारी सृष्टि को ।
है वन्दना विशिष्ट से है अर्ज सरे आम से ।।
थरथरा रहा है विश्व जिन्दगी के नाम से ।।

वैमनस्यता का आज बीज कौन बो रहा,
स्नेह प्रेम भावनाओं का जहान खो रहा ।
शांति को खरीदने चले है लोग दाम से ।।
थरथरा रहा है विश्व जिन्दगी के नाम से।।

जो न विश्व बन्धुता गली गली में आयेगी,
प्यार पुष्प वाटिका सहज ही सूख जायेगी ।
फिर करेगी सीय कैसे सैन आपने राम से।।
थरथरा रहा है विश्व जिन्दगी के नाम से ।।

कौन भूल पायगा हिरोशिमा पै घात को,
क्रन्दनी दिवा को औ विषैले वज्रपात को ।
सिहर उठी वसुन्धरा अमानवीय काम से ।।
थरथरा रहा है विश्व जिन्दगी के नाम से ।।



तिरंगा

लहराए स्वछन्द तिरंगा लाल किले पर शान से ।
हमे प्यार है जान से बढकर अपने हिन्दुस्तान से ।।

इसकी बलिवेदी पर दी है कितनों ने कुर्बानी,
जाति पाति से ऊपर उठकर लिख दी अमर कहानी ।
हर इन्सां भाई–भाई है कह दो सकल जहान से ।।
हमे प्यार है जान से बढकर अपने हिन्दुस्तान से ।

औरो के घर के थाली की आस नहीं हम करते,
हँसते गाते हम हिलमिलकर मिलजुल कर हम रहते ।
राम से जितना प्यार हमे है वही प्यार रहमान से ।।
हमें प्यार है जान से बढकर अपने हिन्दुस्तान से।।

गोदावरी, गोमती, गंगा, सरयू, यमुना प्यारी,
नीलगिरी औ विन्ध्य, हिमालय इनकी भी छवि न्यारी ।
गीता और कुरान गुंजरित होती इस उद्यान से ।।
हमें प्यार है ज़ान से बढकर अपने हिन्दुस्तान से ।।

हम पर जो भी उठे बांह वह बांह तोड दी जायेगी,
हम पर जो भी उठे ऑख वह ऑख फोड दी जायेगी ।
सरे आम उद्घोष हमारा आज सरे मैदान से ।।
हमें प्यार है जान से बढकर अपने हिन्दुस्तान से ।।



अनवरत पग बढ़ाते चलो

जग तुम्हे साथ दे या न दे अनवरत पग बढाते चलो ।
प्यार तुमको मिले ना मिले भारती गीत गाते चलो ।।

फूल कांटे मिले राह में कोई शिकवा कहीं मत करो,
जान आशीष सब शम्भु का अपना दामन उन्हीं से भरो ।
दीन का दर्द तुम बॉटकर उनपे खुशियां लुटाते चलो ।।
जग तुम्हे साथ दे या न दे अनवरत पग बढाते चलो ।

आत्म मंथन स्वयं का करो यह न देखो वो क्या कर रहा,
रंग नेकों नियति के यहाँ अपने–अपने में सब रंग रहा,
स्वार्थ के रंग मत रंगो स्नेह सरिता बहाते चलो ।।
जग तुम्हें साथ दे या न दे अनवरत पग बढाते चलो ।

किसने जी प्यार की जिन्दगी जग में संघर्ष होता रहा ।
हॅसने वाले यहॉ कम मिले जिसको देखो वो रोता रहा ।
इनसे ऊपर उठो मित्रवर दर्द में मुस्कुराते चलो ।
जग तुम्हें साथ दे या न दे अनवरत पग बढाते चलो ।।

आत्म दर्शन सभी में करो जग सुहाना नजर आयेगा,
स्वार्थ का जो सहारा लिया हर जगह यह कहर ढायगा ।
सबमें बन्धुत्व तुम बॉटकर प्यार से गुनगुनाते चलो ।
जग तुम्हे साथ दे या न दे अनवरत पग बढाते चलो ।।

सबमें प्रीत जगाओ

सबमें प्रीत जगाओ सबमें प्यार बढाओ भाई रे ।
मानवता के परिपोषण में सच्ची यही कमाई रे ।।

सराबोर स्नेहिल भावो को लेकर आगे आओ,
सब इन्सान एक है ऐसी ज्योति नई फैलाओ ।
सबमे हो भाईचारा हो नेह सभी के दिल में,
एक राग मे गीत गुजरे भरी विश्व महफिल मे ।
नए नए अपनी वीणा में तार लगाओ भाई रे ।।
सबमे प्रीत जगाओ सबमें प्यार बढाओ भाई रे ।।

ईसा राम मुहम्मद नानक काम सभी के आए,
सकल विश्व कल्यान हेतु वे संकट सदा उठाए ।
उनके पद चिन्हो पर चलना धरम हमारा होगा,
सबमे प्रेम प्रसारण ही सतकरम हमारा होगा ।
आपस की अनबन दफना सद्भाव बढाओ भाई रे ।।
सब में प्रीत जगाओ सबमे प्यार बढाओ भाई रे ।।

रामायण कुरान कब कहती द्वेष करो हे प्यारे ।
अपने घर में बैठे–बैठे क्लेष करो हे प्यारे ।
दया भाव की हर आयत है बन्धु प्रेम चौपाई,
पर उपकार सभी मजहब ने बार–बार दुहराई ।
ग्रन्थों के सपने साकार बनाओ मेरे भाई रे ।।
सबमे प्रीत जगाओ सबमे प्यार बढाओ भाई रे ।।

भाँति–भाँति के पौधे हो फल भाँति–भाँति के आएँ,
सतरंगी यह देख वाटिका जगवाले ललचाएँ ।
पी कहँ करे पपीहा कोयल छेडेगी स्वर लहरी,
मोर मस्त हो नाचे गाएँ शामो सहर दुपहरी ।
हर तितली भौरे संग अपने जश्न मनाओ भाई रे ।।
सबमें प्रीत जगाओ सबमें प्यार बढाओ भाई रे ।।



हम सभी को प्यार दें

क्यों न इस वसुन्धरा पै हम सभी को प्यार दे ।
क्यों न इस जहान का नक्स ही सुधार दें ।।

सनेह प्रेम भाव को जाने क्या हुआ,
समत्व मंत्र को यहाँ ग्रहण लगा हुआ ।
लहू का प्यासा आज भाई–भाई हो गया,
लखन कहीं गुमा कहीं पे दाऊ खो गया ।
प्रवल पली हृदय की पूतना को क्यो न मार दे ।।
क्यों न इस वसुन्धरा पै हम सभी को प्यार दें ।।

जूही, चमेली, मोगरा सतत महक रही,
वेला, गुलाव, रातरानी भी गमक रही ।
हजारा सौरभी मलय पवन प्रसारता,
आज भी सूरजमुखी सूरज निहारता ।
इन्हीं का संस्कार हम स्वयं में संवार दे ।।
क्यों न इस वसुन्धरा पै हम सभी को प्यार दें ।।

मनुष्य से मनुष्यता कहाँ चली गई,
ये जिन्दगी जिधर चली उधर छली गई ।
देवता मे दैत्य का निवास हो रहा,
इसी से अस्त्र–शस्त्र का विकास हो रहा,
शस्त्र के प्रहार को प्रसान्त में निसार दे ।।
क्यों न इस वसुन्धरा पै हम सभी को प्यार दें ।।

कोकिला की कूक में कोई कमीं नहीं,
मयूर के नयन की भी गई नमीं नहीं ।
श्याम धन निरख के मोर अब भी नाचते,
चाँद को चकोर मस्त अब भी ताकते ।
इन्हीं की प्रेरणा को अंतरंग में उतार ले ।
क्यो न इस वसुन्धरा पै हम सभी को प्यार दें ।।

जवानों जागा करते हो

वतन का करने को कल्यान जवानो जागा करते हो ।
वतन का करने को उत्थान जवानों जागा करते हो ।।

दादा भाई, विस्मिल, नेहरू गाँधी के प्रान तुम्हीं,
जिनके खातिर वे मरते थे उनके अरमान तुम्हीं ।
तुममे है कितने भक्त वोष मौका तो आने दो,
भारत माता की आंचल के भी हो अभिमान तुम्हीं ।
वचाने इन वीरो की शान जवानो जागा करते हो ।।
वतन का करने को कल्यान जवानो जागा करते हो ।।

सीमा पर दुश्मन जव–जव दाव लगाने लगते हैं,
काले–काले वादल जव–जव मंडराने लगते है ।
बाहर से मित्र भावना सिर्फ प्रदर्शित होती है,
अन्दर–अन्दर सहारक शस्त्र जुटाने लगते हैं ।
तूँ वनकर शत्रु निदान जवानो जागा करते हो ।।
वतन का करने को कल्यान जवानों जागा करते हो ।।

भारत के वीरों को जव–जव पछुआ ने छेडा है,
उसने अपने मुँह से अपनी आफत को टेरा है ।
फिर चक्रवात सा सकल विश्व मे खाया है चक्कर,
जब पुरवाई ने आक्रोशित रूख अपना फेरा है ।
बनकर ऑधी तूफान जवानो जागा करते हो ।।
वतन का करने को कल्यान जवानों जागा करते हो ।।

चुन गए दीवारों मे हॅसते झुकना कब सीखा है,
रूकती है हवा रूके तुमने रूकना कब सीखा है ।
जब हुई वतन की माँग किया सर्वस्व निछावर है,
निज मातृभूमि की रक्षा से मुडना कब सीखा है ।
आन पर होने को बलिदान जवानों जागा करते हो ।।
वतन का करने को कल्यान जवानों जागा करते हो ।।

•

आह्वान नई पीढ़ी से

कौन कहता है कि तुम निरूपाय हो,
कर्मण्येवाधिकारस्ते को सम्हालो,
मा फलेषु कदाचन मे जान भर दो ।
फिर तुम्हारा नील नभ भी चरण चूमे,
पग तलों में विजय श्री होगी तुम्हारे ।
आज परिवर्तन की आँधी चल पड़ी है,
डिग न जाओ अपने पथ से युवा मेरे
तूँ चरण में जामवन्ती शक्ति भर दो ।
आवरण अब इस जमाने का बदलना तुम्ही को,
हर सुमन को गूथ कर माला बनानी एक ही है ।
स्वर्ग तक सीढी लगाए यह नहीं है काम अपना,
हमें तो है इस धरा को स्वर्ग के अनुरूप करना ।
सद्चरित, सद्भाव से, नेह से उपकार से ।
क्या नहीं अभिशाप कन्या बन चुकी है
जबकि सोने भाव में वर तुल रहे हैं ।
दाग कितनें आँचलों में है लगाती कालिमा यह
और कितनें स्वप्न यूँ ही हैं अधूरे टूटते ।
नई पीढी से निवेदन आज मेरा,
तुम जो चाहो तो ये अपयश तोड सकते हो,
जमाने को कलंकित इस दिशा से मोड सकते हो ।
कौन कहता है कि तुम निरूपाय हो ।

•

श्रम कण

श्रम कणों से यह वसुन्धरा सँवार दो ।
लहलहाए खेत औ खलिहान तुम्हारे,
लहलहाए साँझ औ विहान तुम्हारे ।
प्रात माधुरी को वसंती वहार दो ।।
श्रम कणों से यह वसुन्धरा संवार दो ।।

वैमनस्यता बलिष्ट हो रही यहाँ,
मानवीय चेतना है खो रही यहाँ ।
इस चमन मे भ्रातृ भाव को प्रसार दो ।।
श्रम कणों से यह वसुन्धरा संवार दो ।।

जाति–पांति भेद–भाव में न भूलना,
ऊँच–नीच के हिडोल में न झूलना ।
तार–तार दिल की वीन का सुधार दो ।।
श्रम कणो से यह वसुन्धरा संवार दो ।।

द्वेष भाव दिल मे नही पालना कभी,
नर्क कुण्ड में न देश डालना कभी ।
वतन की आन पर सखे समस्त वार दो ।।
श्रम कणों से यह वसुन्धरा सँवार दो ।।

देश के नहीं हुए तो सब अनर्थ है,
मनुष्य रूप मे तुम्हारा जन्म व्यर्थ है ।
प्यार पुंज तुम जहाँ में सबको प्यार दो ।।
श्रम कणों से यह वसुन्धरा सँवार दो ।।

ये मेरा ज़मी है

ये मेरी जमीं है मेरा आसमां है ।
कि चलता इसी में मेरा कारवां है ।।

गायत्री के पद गार्गी की ऋचाएँ,
हुई गुंजरित हैं ये चारों दिशाए ।
सतत ज्ञान की जलती इनकी शमां है ।।
ये मेरी ज़मी है मेरा आसमॉ है ।।

सकल विश्व को हमनें परिवार जाना,
सहज भाव से सबको अपना है माना ।
किशन राम का नाम जपता जमॉ है ।।
ये मेरी ज़मीं है मेरा आसमॉ है ।।

धरम भाई–भाई का हम जानते हैं,
धरा मॉ के सब पूत हम मानते हैं ।
इसी से धरा मॉ पै हमको गुमॉ है ।।
ये मेरी जमी है मेरा आसमॉ है ।।

है गीता रामायन में भारत का दर्शन,
रामेटे हैं बन्धुत्व पर्वत प्रवर्षण ।
अकथ भ्रातृ भावो का इसमें बयॉ है ।।
ये मेरी ज़मी है मेरा आसमॉ है ।।

ये मन्दिर ये मस्जिद है मालिक के डेरे,
सहज भाव से बैठ मसले निवेरे ।
ये है चाल किसकी उठाता धुऑ है ।।
ये मेरी जमी है मेरा आसमॉ है ।।



प्यारा हिन्दुस्तान

प्यारा हिन्दुस्तान हमारा प्यारा हिन्दुस्तान है ।
अभिलाषाएँ इससे सारी यह अपना अरमान है ।।

प्रतिशोधी ज्वालाओ ने कब किसको चैन दिया है,
सर्पो की फुकारो ने किसको मृदु बैन दिया है ।
शत्रु–मित्र की करनी हमको अब निश्छल पहचान है ।।
प्यारा हिन्दुस्तान हमारा प्यारा हिन्दुस्तान है ।।

फूट बीज बोने वाले तुम हो कितने नादान,
वीर शहीदो की धरती है पूरा हिन्दुस्तान ।
जहॉ त्रिनेत्र खुला है अपना बन जाता शमसान है ।।
प्यारा हिन्दुस्तन हमारा प्यारा हिन्दुस्तान है ।।

अमृतसर, अजमेर हो दिल्ली दर्द कहीं भी होता है,
सत्य शिवम् सुन्दरम भारत माता का दिल रोता है ।
तन–मन–धन न्यौछावर करके करना हमे निदान है ।।
प्यारा हिन्दुस्तान हमारा प्यारा हिन्दुस्तान है ।।

गुरूद्वारा, मन्दिर, मस्जिद है सब ही हमको प्यारे,
हमने हिलमिल कर आपस में सबके काज संवारे ।
होली, वैसाखी दानो में छेडी मधुरिम तान है।।
प्यारा हिन्दुस्तान हमारा प्यारा हिन्दुस्तान है ।।

सिख मरे या हिन्दू, मोमिन इस धरती के बेटे,
हम सब मिल कर वैमनस्यता आओ सभी समेटे ।
सीना तान बढे हैं मिल कर जब आया तूफान है ।।
प्यारा हिन्दुस्तान हमारा प्यारा हिन्दुस्तान है ।।

•

बन्धुत्व की शहनाई

मेरे पथ को आलोकित करना हे मेरे राम जी ।
प्रातः तुम्हारी करूँ वन्दना शरणागत हूँ शामजी ।।

गूज उठे बन्धुत्व भाव की चहुँ दिशि मे शहनाई,
हृदय–हृदय मे परहित पर उपकार लेय अंगडाई ।
चलकर मैं निष्काम डगर पर करता जाउँ काम जी ।।
मेरे पथ को आलोकित करना हे मेरे राम जी ।।

जहॉ राम मर्यादा पुरूषोत्तम से गाए जाते हैं,
नयन नयन मे योगिराज श्री कृष्ण वसाये जाते है ।
शिवि दधीच का भारत हो अभिराम जी ।
मेरे पथ को आलोकित करना हे मेरे राम जी ।।

हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई सबमे दर्शन अपना,
भारत मॉ के अरमानों का कभी न टूटे सपना ।
अमन चैन सबके जीवन मे सभी करें आराम जी ।।
मेरे पथ को आलोकित करना हे मेरे राम जी ।।

प्रतिपादित अपनें आदर्शो का हम सब सम्मान करे,
प्रश्न चिन्ह जो लगे प्रतिष्ठा पर न्यौछावर प्रान करे ।
मानवता के अरिदल का हम कर दें नींद हराम जी ।।
मेरे पथ को आलोकित करना हे मेरे राम जी ।।

•

स्नेह दीप

तेल का दीप हमने जलाया मगर,
स्नेह का दीप हमने जलाया नहीं ।
साथ उठते रहे साथ थे बैठते,
पर किसी को गले से लगाया नहीं ।

नीच के ऊँच के भाव पलते रहे,
जितना छलना था दुनियाँ को छलते रहे ।
प्यार चेहरे मेरे छलकता रहा,
दिल मे खोजा कहीं प्यार पाया नहीं ।
तेल का दीप हमनें जलाया मगर स्नेह का
दीप हमने जलाया नहीं ।

तन बदन का है सौदा हुआ हाट में,
दिल चढा ना कभी ताकड़ी बाट में ।
प्यार जिसको मिला प्यार से ही मिला,
प्यार पैसे से कोई भी पाया नहीं ।।
तेल का दीप हमनें जलाया मगर,
स्नेह का दीप हमने जलाया नहीं ।।

सीख की बात सबको सुनाते रहे,
राम ईसा मोहम्मद को गाते रहे ।
आचरण उनकी बातों का करना जहाँ,
खुद पै उनको कभी आजमाया नहीं ।।
तेल का दीप हमने जलाया मगर,
स्नेह का दीप हमने जलाया नहीं ।।

दीप ऐसा जलाओ जो जलता रहे,
कुछ इधर कुछ उधर प्यार पलता रहे ।
नेह की इस जहाँ में कमी भी नहीं,
प्रीत बाती हमीं ने बनाया नहीं ।।
तेल का दीप हमने जलाया मगर,
स्नेह का दीप हमने जलाया नहीं ।।



भारत माता के सपूत

भारत माता के सपूत तुम भरमाए से क्यो लगते हो ।
इस भू पर पैदा होकर भी पर जाए से क्यों लगते हो ।।

यह धरती कितनी उदार है जिसने सबको प्यार दिया है,
पावस शिशिर वसन्त आदि ऋतुओं का भी उपहार दिया है ।
भॉति–भॉति के फूल कली इस गुलशन में मुस्काते रहते,
चन्दन चीड चमेली सौरभ जन–जन में बिखराते रहते ।
इस अतीत गौरव को स्वाहा करने का दम क्यों भरते हो ।।
भारत माता के सपूत तुम भरमाए से क्यों लगते हो ।।

क्या न पुत्रवत माता ने है तुमको स्तनपान कराया,
शीतल मन्द सुगन्ध पवन की लोरी क्या है नहीं सुनाया ।
तुम जैसे पुत्रो से ही माता का ऊँचा भाल रहा है,
शौर्य भरी नव गाथाओ से सदा सशंकित काल रहा है ।
स्वर्ण अक्षरी इतिहासों को धूमिल करने क्यों चलते हो ।।
भारत माता के सपूत तुम भरमाए से क्यों लगते हो ।।

कहीं उडाना कहीं काटना यही तुम्हारा काम रह गया,
इस जगती की संचित इज्जत बस करना नीलाम रह गया,
अपनीं ही मॉ के टुकडे करने पर क्यो होते आमादी,
गैरों को मुस्कान मिलेगी औ अपनी होगी बर्बादी ।
मानस में अंगारे भरकर तुम भी तो जलते मरते हो ।।
भारत माता के सपूत तुम भरमाए से क्यों लगते हो ।।

किसको बहना सावन के पूनम के दिन राखी बांधेगी,
किस बेटे के लिए मात फिर भूखे रह कर व्रत साधेगी ।
मम्मी–पप्पा के स्वर क्या इन दीवारो से आ पायेंगे,
दादा–दादी कैसे अपनें हाथों चिता जला पायेंगे ।
राम, कृष्ण नानक की धरती यमपुर जैसे क्यों करते हो ।।
भारत माता के सपूत तुम भरमाए से क्यों लगते हो ।।



वसन्त पर पड़ौसी को संदेश

इस वसन्त पर पास पडौसी को मेरा संदेश है।
अपनें–अपने हाथ सवारो अपना–अपना देश है।।

किसकी मिटी पिपासा लिप्सा से इस जगती तल पर,
किसने भूख मिटा ली अपनी औरों के घर रह कर ।
अपने बागीचे को मनमोहक उद्यान बनाओ,
अपने–अपने राग रंगो से आप वसन्त मनाओ ।
हिन्द सिन्धु को करो समर्पित दिल में जो भी द्वेष है ।।
इस वसन्त पर पास पडौसी को मेरा संदेश है।।

पाल उदर मे गाठ किसी का कब होगा कल्यान,
मानवता मिट जाती इससे मिट जाता इन्सान ।
जब इन्सान नहीं होगा तो दुनियाँ का व्यवहार क्या,
फिर किसको देगा कोई किसके द्वारे सत्कार क्या ।
सर्व विदित है अपने को खा जाता अपना क्लेश है ।।
इस वसन्त पर पास पडौसी को मेरा संदेश है ।।

सत्य अहिन्सा की गंगा में गोते आज लगाओ,
सुप्त भ्रमित भाई के दिल में हिलमिल प्रीत जगाओ ।
अखिल अवनि पर पुण्य पताका पंचशील लहराए,
हम सब भाई–भाई है यह मंत्र सभी दुहराएँ ।
सकल विश्व परिवार एक यह वेदों का उपदेश है ।।
इस वसन्त पर पास पडौसी को मेरा संदेश है ।।



मनुज संवारते चलो

जो मिले मनुज उसे सँवारते चलो,
मनुष्य में मनुष्यता उभारते चलो ।

गरल मिले गरल पियो सुधा मिले सुधा,
सुमन–सुमन, चमन–चमन निखारते चलो ।
करे प्रयास आदमी सही डगर चलें,
क़दम–क़दम भविष्य को विचारते चलो,
मनुष्य में मनुष्यता निखारते चलो ।

धरा पः राम कृष्ण की पिशाच क्यो पले,
दया दधीच कर्ण द्वार हाथ क्यों मले ।
अतीत वर्तमान में उतारते चलो ।।
मनुष्य मे मनुष्यता निखारते चलो ।।

सम्हाल कर सको अगर हसीन जिन्दगी,
निशान्त है दिवान्त यह नवीन जिन्दगी ।
स्वयं सुधर समाज को सुधारते चलो ।।
मनुष्य मे मनुष्यता निखारते चलो ।

न जाति पांति का कहीं कोई कोई किताब हो,
मनुज मनुज खिला हुआ समन गुलाब हो ।
सभी को साथ साथ धर्म धारते चलो ।।
मनुष्य में मनुष्यता निखारते चलो ।।

चलो चलो रूको नहीं यही समय कहे,
चलो चलो रूको नहीं यही हृदय कहे ।।
कठिन समय सहज सरस गुजारते चलो ।।
मनुष्य मे मनुष्यता निखारते चलो ।।

मनुष्य है मनुष्य तो मनुष्य ही बने,
मनुष्य क्या समाज की सुने न धडकनें ।
ग़ज़ल हसीन प्यार को उचारते चलो ।।
मनुष्य मे मनुष्यता निखारते चलो ।।

•

मधुमास

आया वसन्त मधुमास लिए ।
नव चेतन नव उल्लास लिए ।।

पीली सरसों मे अगड़ाई, नीली तीसी में तरुणाई ।
जौ लगे झॉकने वाली में, गेहॅं झूमे हर क्यारी मे ।
मूली गाजर संग सरसाई, धनियॉ उन्मत्त विकास लिए ।।
आया वसंत मधुमास लिए, नव चेतन नव उल्लास लिए ।।

अब आम्र बौर भी बौराई, डाली डाली मस्ती छाई ।
मॅंह–मॅंह महकी बगिया सारी, लाली पलास सेमल भाई ।।
बिखरी है भौरो की गुजन कुछ हास लिए परिहास लिए।।
आया वसत मधुमास लिए, नव चेतन नव उल्लास लिए ।।

रुन झुन पनघट गाए, पछुआ कलियों को सहलाए ।
कोई गुन गुन करती आए, कोई प्यारी होरी गाए ।
हलचल हलचल सी हर अंचल सुरमई नयन नव प्यास लिए ।।
आया वसंत मधुमास लिए, नव चेतन नव उल्लास लिए ।।

पी कहॅं पपिहे की तान छिड़ी, कू–कू कोयल मुस्कान छिडी ।
मन भाई शीत पवन आई, तन मन मनमानी सिहराई ।
मुख मण्डल कितने ही हर्षित, निज पिया मिलन की आस लिए ।।
आया वसंत मधुमास लिए, नव चेतन नव उल्लास लिए ।।



कर्म क्षेत्र

तुम्हें नारियों बढना होगा कर्मक्षेत्र में शान से ।
अबला नाम मिटा दो जग के शब्द कोष उद्यान से ।।

तुम सीता तुम सावित्री हो, तुम अनुसुइया माता हो ।
तुम मीरा तुम लक्ष्मी बाई सबला भारत माता हो ।
तुम इन्द्रा बन वतन के लिए खेल गई हो जान से ।।
तुम्हें नारियों बढना होगा कर्मक्षेत्र में शान से ।।

सदियों से तुम त्रस्त रही हो पस्त घुटन को झेला है ।
अब प्रकाश में आने के हित आई सुखद सुवेला है ।
पढ़ लिख कर अब पिण्ड छुडाना तुम्हें तमस अज्ञान से ।।
तुम्हें नारियों बढ़ना होगा कर्म क्षेत्र में शान से ।।

बेटी बहना पत्नी माँ के कितनें रूप तुम्हारे हैं ।
तुमने अपनीं सूझ–बूझ से घर के काज संवारे हैं ।
फूलों से खेला है तुमने तुम खेली तूफान से ।।
तुम्हें नारियों बढ़ना होगा कर्म क्षेत्र में शान से ।।

बढती मँहगाई को रोको पर्यावरण सुधार करो ।
सीमित कर परिवार तूँ अपने भारत का उद्धार करो ।
तुम्हीं शक्ति हो तुम दुर्गा हो मैं कहता ईमान से ।।
तुम्हें नारियो बढना होगा कर्म क्षेत्र में शान से ।।

•

दिल क्यों दूर है

आपस मे मिलते रहते हैं फिर भी दिल क्यों दूर है ।
ऐसे क्या व्यवधान पड़े हैं जिनसे हम मजबूर हैं ।।

रंग–ढंग परिवेश भेद क्या कोई मौलिक भेद है,
यह सब चक्रव्यूह अपना है इसी बात का खेद है ।
आपस मे सद्भाव बढे तो सारा जग अपना होगा,
गाँधी जी के राम राज का पूरा सब सपना होगा ।
डाली डाली पात पात को होने लगा गरूर है ।।
आपस में मिलते रहते हैं फिर भी दिल क्यों दूर है ।।

अपनापन के घेरे को है हमने इतना घेर दिया,
पर उपकार भावनाओं का आज काफिला फेर दिया ।
औरो के हित मे जिसने अपने भी हित को देखा है,
सादर पूजा जाता है वह यहाँ उसी का लेखा है ।
सदा स्वार्थ की बात जहाँ हो कालानाग जरूर है ।।
आपस में मिलते रहते हैं फिर भी दिल क्यों दूर है ।।

कोकिल नें क्या दिया किसी को कागा क्या ले जाता है,
भाव मधुर रस दे जन–जन को आनंदित कर जाता है ।
प्रातः सायं की लाली का भी अपना आभार है,
स्वागत करती है प्रातः सायं जाते का प्यार है ।
सदा नियति नें जड़ चेतन को प्यार दिया भरपूर है ।।
आपस मे मिलते रहते हैं फिर भी दिल क्यों दूर है ।।



कोई मधुर संगीत सिरजो या कि सिरजो छन्द ।
मन में क्यों है अन्तर्द्वन्द, मन में क्यों है अन्तर्द्वन्द ।।

जन में कमलवत स्थिति रखना सदा प्यारे,
यहॉं फल है अनोखे सम्हल फल चखना सदा प्यारे ।
तुम परेवा हो सदा उन्मुक्त हो स्वछन्द ।।
मन में क्यों है अन्तर्द्वन्द, मन में क्यों है अन्तर्द्वन्द ।।

सब हैं अपने और कोई भी नहीं अपना,
सच है जो भी सामने है वह भी इक सपना ।
जिन्दगी सीमित है कितनी और श्वासें चन्द ।।
मन में क्यो है अन्तर्द्वन्द, मन में क्यों है अन्तर्द्वन्द ।।

स्वार्थरत संसार में सबको बनाओ मीत,
हर सुमन तुम सिखाओ स्नेह का संगीत ।
कर न जाओ भूल से अतिमूढता मतिमन्द ।।
मन में क्यों है अन्तर्द्वन्द, मन में क्यों है अन्तर्द्वन्द ।।

आ सको तो निर्बलों के काम आ जाओ,
यत्न से जीवन सफल अभिराम कर जाओ ।
नेह शक्कर से बनाओ प्यार का गुलकन्द ।।
मन में क्यों है अन्तर्द्वन्द, मन में क्यों है अन्तर्द्वन्द ।।



क़दम आगे बढ़ाओ

अब कदम अपना आगे बढाओ करना कोई बहाना नहीं है ।
जोश खाएगा कब तक जमाना सारे घर को जलाना नहीं है ।।

गैस स्टोव कब तक फटेंगे जुल्म कब तक ये सहती रहेगी,
कब तलक इन बहू बेटियों की लाश यूँ ही निकलती रहेगी ।
दोस्तों घर की मासूमियत पर इस तरह जुल्म ढाना नहीं है ।।
अब कदम अपना आगे बढाओ करना कोई बहाना नहीं है ।।

गौरी दुर्गा औ संतोषी माता शक्तिरूपा इन्हें ही तो माना,
इस जहाँ में तो की इनकी पूजा सरस्वती लक्ष्मी इनको जाना ।
इनका अपमान कर अपने घर की आबरू को घटाना नहीं है ।।
अब कदम अपना आगे बढाओ करना कोई बहाना नहीं है ।।

इस जमाने को क्या हो गया है वर तो नीलाम होने लगे हैं,
अब सरे आम इन्सान अपनी आदमीयत को खोने लगे है ।
नकली चेहरे की क्या आबरू है ऐसा चेहरा लगाना नहीं है ।।
अब कदम अपना आगे बढाओ करना कोई बहाना नहीं है ।।

काम क्यों हम करें इस तरह के जिससे बदनाम इन्सानियत हो,
घर मे आतंक डेरा जमाए औ जमाने मे हैवानियत हो ।
देवताओं के घर मे अमन हो क्लेश का रंग चढाना नहीं है।।
अब कदम अपना आगे बढाओ करना कोई बहाना नहीं है ।।



खेत हमारा कितना प्यारा

खेत हमारा कितना प्यारा आओ तुम्हें दिखाएँ ।
नन्ही–नन्ही फूल कली में हिलमिल दिल बहलाएँ।।

पीली–पीली सरसो जैसे ओढे पीली चादर,
गेहूँ की हरियाली लहरे जैसे कोई सागर ।
गन्ने रस से भरे देख लो आओ तुम्हें खिलाएँ ।।
खेत हमारा कितना प्यारा आओ तुम्हे दिखाएँ ।।

गाजर, मटर, टमाटर, शलजम, गोभी शोभा भारी,
धनियाँ, सोया, शम्फु आदि से महँ–महँ महके क्यारी ।
लाल–लाल है लगे चुकन्दर आओ तुम्हे चखाएँ ।।
खेत हमारा कितना प्यारा आओ तुम्हें दिखाए ।।

नीली पीली रंग बिरंगी तितली की टोली है,
लगे प्रात को ऐसे लाली ऊषा ने घोली है ।
सुखद भोर की मलय पवन में आओ सैर कराएँ ।।
खेत हमारा कितना प्यारा आओ तुम्हें दिखाएँ ।।

लाला लाली अंजू मंजू मोना पिंकी रानी,
गीता सीता रीता नीता आशा अरू तूफानी ।
इनके संग में रम कर अपना बालकपन लौटाए ।।
खेत हमारा कितना प्यारा आओ तुम्हे दिखाए ।।



इस तरह चलो/

विश्वास

मैं तुम्हारे पास आऊँगा नहीं अब मुझको तुमसे भय लगने लगा है ।
तुम जो पहले थे नहीं वह रह गए सृजन हाथों से प्रलय पलने लगा है ।।

शान्ति के नाम पर तुम शान्ति को छलने लगे हो,
कहॉं था चलना तुम्हे और तुम कहॉं चलने लगे हो ।
जब किसी को स्नेह करने में तुम्हे संशय दबोचे,
स्वयं को धिक्कार कर निज हाथ ही मलने लगे हो ।
प्रणय का भी गीत तेरा अब अलय लगने लगा है ।।
मै तुम्हारे पास आऊँगा नहीं ....।।

होना है होगा वहीं यह तो है निचय सा,
चतुर्दिक छाने लगा है अब शनिश्चर सा ।
पलायन इन्सान से इन्सानियत का है,
आज जन–जन में जिकर हैवानियत का है ।
अब मनुज हैवान में होता विलय लगने लगा है ।।
मैं तुम्हारे पास आऊँगा नहीं ....।।

अनुगम रसखान मीरा जायसी का छोडकर,
द्वन्द्व से कर ली सगाई अमन से मुँह मोडकर ।
बगल मे छुरी छिपाए और मुख में राम है,
क्या यही बस रह गया इन्सान तेरा काम है ।
हुताशन समर्पित सारा जगत लगने लगा है ।।
मैं तुम्हारे पास आऊँगा नहीं ....।।

काल कवलित विश्व का अस्तित्व क्या मानूं,
आज मानव मैं तेरा व्यक्तित्व क्या मानूं ।
वन्दना के हाथ तेरे रक्त रजित हैं,
विध्वसक राहो पर सब विज्ञान पंडित हैं ।
डुबो देगा विश्व को विज्ञान तय लगने लगा है ।।
मैं तुम्हारे पास आऊँगा नहीं ....।।



होड़

ये होड अस्त्र–शस्त्र का मिटेगा कब तलक,
धरा पै ठाम ठाम क्यों लड़ाई हो रही ।

पग हमारे बढ चले है अब क्षितिज के पार,
घर में क्या है माजरा फिकर किसे है यार ।
भविष्य विश्व का मिटाने पर तुले हैं हम,
बहार में खिजां बुलाने पर तुले है हम ।
मनुष्यता की जैसे है विदाई हो रही ।।
धरा पै ठाम ठाम क्यों लडाई हो रही ।

क्यों न पहले हम समष्टि को सँवार ले,
तार–तार अपनी बीन का सुधार ले ।
विनाश के कगार पर सब खडे हुए,
मृत्यु की किरण बनाने मे अडे हुए ।
जिन्दगी की मृत्यु से सगाई हो रही ।।
धरा पै ठाम ठाम क्यों लडाई हो रही ।।

महान शक्तियो से ये विनम्र अर्ज है,
बचाना विश्व को हमारा पहला फर्ज है ।
मनुष्य जो मनुष्य को बचाएगा नहीं,
सनेह सिक्त धार जो बहाएगा नहीं ।
वसुन्धरा से क्यो विलग लुनाई हो रही ।।
धरा पै ठाम ठाम क्यो लडाई हो रही ।।

गरीयशी अवनि के पूत है यहाँ सभी,
हिरोशिमा सी हाल अब हो न फिर कभी ।
सबको भाई–भाई से गले लगाए हम,
अनेकता में ऐक्य भावना जगाएं हम,
समग्र देवगण से है दुहाई हो रही ।।
धरा पै ठाम–ठाम क्यो लडाई हो रही ।।

•

वरषा रानी

तुम रूठ गई लगता है सारी दुनियॉ रूठ गई ।
उपवन में हरियाली का नाम निशान नहीं,
सावन मे कजरी की कोई मधुगान नहीं ।
झूले बिन नाथी पॉची उडति चुनरिया रूठ गई ।।
तुम रूठ गई लगता है सारी दुनियॉ रूठ गई ।।

तडपे है कितने खेत मिलन की आशा में,
आहुती हुताशन सब अरमान पिपासा में ।
क्यारी क्यारी रूठी सुमनों से कलियां रूठ गई ।।
तुम रूठ गई लगता है सारी दुनियॉ रूठ गई ।।

मुस्कान न जाने ऑगन से किस ओर गई,
उसकी अंचल आभा जाने कि छोर गई ।
कर कामिनी कंगन किंकिनि कटि करधनियॉ रूठ गई ।।
तुम रूठ गई लगता है सारी दुनियॉ रूठ गई ।।

इस तरह न रूठा करते हैं बरषा रानी,
अवनी को पहना दो प्यारी चूनर धानी ।
हर गॉव गॉव रूठे देखो हर गलियॉ रूठ गई ।।
तुम रूठ गई लगता है सारी दुनियॉ रूठ गई ।।

अब जले हुओं को और जलाना ठीक नहीं,
मधुमय जीवन बिन और सताना ठीक नहीं ।
धरती अम्बर रूठे वर से दुलहनियॉ रूठ गई ।।
तुम रूठ गई लगता है सारी दुनियॉ रूठ गई ।।

स्वर के साजों मे जैसे कोई सार नहीं,
दिल की वीणा के तारों में झकार नहीं ।
कजरा बिदिया रूठी पग से पयजनियॉ रूठ गई ।।
तुम रूठ गई लगता है सारी दुनियॉ रूठ गई ।



विश्वास नहीं होता

क्षण भंगुरता जीवन का होता कोई आभास नहीं है ।।
कोई दीप बुझ गया पर होता मुझको विश्वास नहीं है ।।

हाथ वही जो बार–बार सम्बोधन मे उठ जाया करते,
पॉव वही जो कण्टकीर्ण पथ सहज भाव बढ़ जाया करते ।
चमक वही आनन पर मुखरित अरिदल को दहलाने वाली,
सौम्य वही जो दलितों, गलितो के मन को बहलाने वाली ।
शेष हो गए श्वॉस–श्वॉस लगता जैसे निःश्वास नहीं है ।।
कोई दीप बुझ गयापर होता मुझको विश्वास नहीं है ।।

जिसकी आभा से आलोकित चौबारा भी गलियारा भी,
जिसकी छाया से आतंकित सदा रहा अंधियारा भी ।
अपनी प्रीत नीत से जिसने हर दिल में प्रासाद बनाया,
जिसने गॉधी नेहरू के पथ शान्ति मार्ग को था सरमाया ।
अघटित घटित हो गया लगता घटित कुछ खास नहीं है ।।
कोई दीप बुझ गया पर होता मुझको विश्वास नहीं है ।।

यही नियति की बदनीयत थी मुझसे मेरी जीत ले गई,
भारत माता की जनता से स्वर संगम संगीत ले गई ।
साज–बाज सुनसान पडे हैं तान गान वीरान हो गया,
बाते करते करते हमसे कोई अन्तर्ध्यान हो गया ।
हृदय–हृदय के पास रहा जो वही हमारे पास नहीं है ।।
कोई दीप बुझ गया पर होता मुझको विश्वास नहीं है ।।

हमसे विलग नहीं कर सकते काल देव मेरा प्रिय नेता,
अमर हो गए तन मन धन जो जनहित में अरपन कर देता ।
उनके आदर्शो का गायन सदा सुबह औ शाम रहेगा ।
जब तक सूरज चॉद रहेगा इन्द्रा तेरा नाम रहेगा ।।
बिखर गए है पंचभूत पर आदर्शो का ह्रास नहीं है ।।
कोई दीप बुझ गया पर होता मुझको विश्वास नहीं है ।।



बढ़ते जायेगे

हम बढते जायेगे हमारी राह पर,
हम सर कटायेंगे वतन की चाह पर ।
बापू के सत्य और अहिंसा को सजाएँ,
इस मातृ भूमि की कभी माटी न लजाएँ ।
भरोसा करते जाएँ अपनी बॉह पर ।।
हम बढते जायेंगे हमारी राह पर ।।
वर्ग भेद छोड के हम सारे साथ है,
कोई बॉया हाथ कोई दॉया हाथ है ।
विझ तो बढेंगे ही मेरी सलाह पर ।
हम बढते जायेंगे हमारी राह पर ।।
शत्रुओं के सर को हम झुकाना जानते ।
कर्ज मातृ भूमि का चुकाना जानते ।
मिटा दिया उसे जो चढ़ गए निगाह पर ।।
हम बढते जायेंगे हमारी राह पर ।।
अनेकता मे एकता से देश एक है,
सभी हैं भारतीय ये संदेश एक है ।
हमारा दिल द्रवित हुआ पडौस आह पर ।।
हम बढते जायेंगे हमारी राह पर ।।



भारत देश महान है

भारत देश महान हमारा भारत देश महान।
ऊँची इसकी आन बान है ऊँची इसकी शान है ।।

राणा वीर शिवा की गौरव गाथा कौन न जाने,
जिसकी शौर्य वीरता का दुश्मन भी लोहा माने ।
पद्‌मा की जौहर गाथा है हाडी का सर दान है ।।
भारत देश महान हमारा भारत देश महान है ।।

सत्य अहिंसा शक्ति हमारे बापू नें समझाया,
पराधीनता की बेड़ी से मॉ को मुक्त कराया ।
भगत सिंह आजाद जवाहर का प्यारा उद्यान है ।।
भारत देश महान हमारा भरत देश महान है ।।

घर के कुछ अनजानो ने जब चक्रव्यूह फैलाया,
लगा जान की बाजी इन्द्रा जी ने इसे बचाया ।
इतिहासों में अमर हो गया उनका यह बलिदान है ।।
भारत देश महान हमारा भारत देश महान है ।।

किसी पृथकतावादी का कल्यान न होने देंगे,
अपने प्यारे गुलशन को वीरान न होने देंगे ।
इसकी रक्षा हित न्यौछावर करनी अपनी जान है ।।
भारत देश महान हमारा भारत देश महान है ।।



प्यारा राजस्थान

हमें प्रान से प्यारा राजस्थान है ।
हमे जान से प्यारा राजस्थान है ।।
इन्द्रा गॉधी नहर है जैसे मंदाकिनी सुहानी,
नहर हिलोरे मारे बहता ठण्डा–ठण्डा पानी ।
लगे सभी को न्यारा राजस्थान है ।।
हमें प्रान से प्यारा राजस्थान है ।।
भोले–भाले लोग यहाँ के सबका आदर करते,
जो आए मेहमान यहाँ सादर स्वागत हैं करते ।
ऑगन का उजियारा राजस्थान है ।।
हमें प्रान से प्यारा राजस्थान है ।।
कहीं माल्टा नींबू नारंगी की शोभा न्यारी,
कहीं ऑवले दाड़िम की है लगे कतारे प्यारी ।
ठाम–ठाम मनमोहक नखलिस्तान है ।।
हमें प्रान से प्यारा राजस्थान है ।।
तीतर हिरन विचरते निर्भय लगते कितने प्यारे,
घाना मे परदेशी पंछी हो स्वच्छंद पधारें ।
मस्त मतीरा बोर काचरी वारो यह उद्यान है ।।
हमें प्रान से प्यारा राजस्थान है ।।

•

मुक्तक

आन वही है जो वतन के लिए,
मान वही है जो वतन के लिए ।
धन वही है जो काम आए
जान वही है जो वतन ।

•

नई चेतना

तुम्हें जवानों नए वर्ष में नई चेतना लाना है ।
पाखण्डों की पगडण्डी को डगर पवित्र बनाना है ।।
आज धरा नें तुम्हें पुकारा नव उत्साह भरोगे तुम,
प्रीत रीति से श्रम सम्बल से हल्का भार करोगे तुम ।
ऊँच-नीच के भेद भाव को हमें समूल मिटाना है ।।
तुम्हें जवानों नए वर्ष में नई चेतना लाना है ।।

कोई कली नहीं मुरझाए देखो खिलने से पहले,
हर क्यारी में हो बसन्त पौधा-पौधा हर सुख गह ले ।
श्याम भ्रमर बन इस गुलशन में मधुरिम गीत सुनाना है ।।
तुम्हें जवानों नए वर्ष में नई चेतना लाना है ।।

सरे आम बाजारों में दूल्हों की बोली लगती है,
कोई गोद विहँसती देखी कोई गोद बिलखती है ।
यह समाज का है कलंक इसको तत्काल हटाना है ।।
तुम्हें जवानों नए वर्ष में नई चेतना लाना है ।।

युवक युवतियाँ दोनों मिलकर समाधान आसान करो,
रूढ़िवादिता छोड़ पुरानी सरल सभी व्यवधान करो ।
ईर्ष्या-द्वेष तिमिर छंटने को स्नेहिल दीप जलाना है ।
तुम्हें जवानों नए वर्ष में नई चेतना लाना है ।।

विविध जातियों का संगम मम भारत की पहचान है,
अवनी के अरमान सभी हैं इस धरती की आन है ।
कण-कण में अब पंचशील का भाव विषद फैलाना है ।।
तुम्हें जवानों नए वर्ष में नई चेतना लाना है ।।

•

पावस

पावस का यह राज मनोरम कितना सुखद निराला है ।
क्यारी–क्यारी में घूमे श्यामल भँवरा मतवाला है ।।
रिमझिम–रिमझिम, रिमझिम–रिमझिम मेह सुहाना आए,
विरहिन अन्तर्मन गुनगुन गुन गीत प्रीत के गाए ।
गहराती भहराती आए यह श्यामल घनमाला है ।।
पावस का यह राज मनोरम कितना सुखद निराला है ।।

सर–सर, सर–सर पुरवा देखो इठलाती लहराई,
उमगाई सरिता से कलकल कलकल की ध्वनि आई ।
शैल शिखर सब उमगाए है झरना खुशी उछाला है ।।
पावस का यह राज मनोरम कितना सुखद निराला है ।।

नई कामिनी सी सज धज कर झूमे सारी धरती,
खेत–खेत बन्जर बन्जर चाहे होवे वह परती ।
धानी–धानी चूनर शोभे बालों में बन माला है ।।
पावस का यह राज मनोरम कितना सुखद निराला है ।।

तितली हर फूलों पर करती बागों में अठखेली,
मधुकर की मादक गुंजन में मचती है रंगरेली ।।
साकी ने जैसे दे दी हो मस्तों को मधु प्याला है ।।
पावस का यह राज मनोरम कितना सुखद निराला है ।।

•

स्वतंत्रता का दीपक

अपनी स्वतंत्रता का दीपक कभी नहीं बुझने देगे ।
भारत माता का अजेय सर कभी नहीं झुकने देंगे ।।

अपना जीवन दीप बुझाकर इसे जलाया वीरो ने,
त्राण किया आँधी से तूफानों से भी रणधीरों ने ।
यह अनन्त तक रहे प्रदीपित नेह नहीं चुकने देंगे ।।
अपनी स्वतंत्रता का दीपक कभी नहीं बुझने देंगे ।।

गुरू गोविन्द भगत सिंह जैसे कितनों ने कुर्वानी दी,
भारतीयता रक्षण हित हँसते अनमोल जवानी दी ।
राहु केतु के हाथों इसको कभी नहीं लुटने देगे ।।
अपनी स्वतंत्रता का दीपक कभी नहीं बुझने देगे ।।

चंचरीक हम इस बगिया के प्राणों से यह प्यारा है,
भाँति–भाँति के फूलों वाला यह उद्यान हमारा है ।
शाश्वत सत्य अहिंसा का दम कभी नहीं घुटने देगे ।।
अपनी स्वतंत्रता का दीपक कभी नहीं बुझने देगे ।।

भेद भाव को दूर भगा कर चला कारवाँ है अपना,
ईसा राम मुहम्मद नानक नाम सभी का है जपना ।
बाधाएँ होवें विशालतम नेक नहीं रुकने देगे ।।
अपनी स्वतंत्रता का दीपक कभी नहीं बुझने देंगे ।।



नवाँकुरों पर नाज़

नवॉकुरों पै आज हमको नाज़ क्यों न हो ।
भविष्य का इन्ही के सर पै ताज़ क्यों न हो ।।

नई डगर नई दिशा इनको चूमती,
वसुन्धरा सपूतो के सहारे झूमती ।
स्वर सरस बने करों में साज क्यों न हो ।।
नवॉकुरों पै आज हमको नाज क्यों न हो ।।

ये चमन के नव सुमन दुलारना इन्हें,
भविष्य वर्तमान को सँवारना इन्हे ।
इन्हीं के हाथ भारती की लाज क्यों न हो ।।
नवॉकुरों पै आज हमको नाज़ क्यो न हो ।।

आयुधों की प्यास को मिटानी है इन्हें,
स्वर्ग तुल्य यह धरा बनानी है इन्हें ।
शान्ति के मिराज का रिवाज क्यों न हो ।।
नवॉकुरों पै आज हमको नाज़ क्यों न हो ।।

वेद मंत्र का यही प्रचार करेंगे,
समत्व भाव का वृहद विकास करेंगे ।
नई विधा चलन नया समाज क्यों न हो ।।
नवॉकुरों पै आज हमको नाज क्यों न हो ।।



वसंत बहार

आ गई वसंत की बहार देख लो ।
शरद है जैसे हो गई फरार देख लो ।।
कोपलें नई नई है झाँकने लगी,
तरह–तरह की तितलियाँ है ताकने लगी ।
नवी नवी कली में नव निखार देख लो ।।
आ गई वसंत की बहार देख लो ।।

कहीं गुलाब मोगरा सुवास दे रहा,
कहीं पपीहरा है पी की आस दे रहा ।
कहीं पवन हुई है बेकरार देख लो ।।
आ गई वसंत की बहार देख लो ।।

दाँत में कोई दबाए चूनरी की कोर,
कसक किसी वदन में उठ रही है पोर पोर ।
छोर–छोर से झलकता प्यार देख लो ।।
आ गई वसंत की बहार देख लो ।।

उमंग आँचलों में कसमसाने लग गए,
प्रीत गीत होठ गुनगुनाने लग गए ।
नयन–नयन में है नई खुमार देख लो।।
आ गई वसंत की बहार देख लो ।।

सरसों तीसी जैसे खिलखिलाने लग गई,
मटर फली में भी उभार आने लग गई ।
मन चले चनों में नव मल्हार देख लो ।।
आ गई वसंत की बहार देख लो ।।

कहीं पै आम्र मंजरी कली पलाश लाल,
कहीं पै अमिलतास स्वर्णहार है कमाल ।
वसुन्धरा का यह नवल श्रृंगार देख लो ।।
आ गई वसंत की बहार देख लो ।।

•

मुक्तक

उनसे कुछ आस लिए चलता हूँ,
दिल मे कुछ प्यास लिए चलता हूँ ।
कब मिली है यहाँ शंकर को सुधा,
फिर भी विश्वास लिए चलता हूँ ।

•

कण–कण मे भगवान

कण–कण में भगवान विश्व के कण–कण में भगवान है ।।
अलख निरंजन अगम अगोचर निर्गुन है गुनवान है ।।
तुमने खोजा मंदिर मस्जिद औ गिर्जा गुरूद्वारा,
दीन जनों की आहों से है उसने तुम्हे पुकारा ।
सत्यम शिवम् सुन्दरम् है वह शील सनेह निधान है ।।
कण–कण में भगवान विश्व के कण–कण में भगवान है ।।

पेड़ो में पौधों में वह हरियाली बन लहराता,
बेला औ गुलाब चम्पा से वह सौरभ बिखराता ।
ऊषा की मादक मुस्कानों मे उसकी मुस्कान है ।।
कण–कण में भगवान विश्व के कण–कण में भगवान है ।।

जगन्नियन्ता जो है वह सविकार शरीर धरेगा क्यो,
पूर्ण ब्रह्म है जो स्वछन्द है बन्धन बीच बंधेगा क्यो ।
वह व्यापक है सकल सृष्टि में दाता वही महान है ।।
कण–कण में भगवान विश्व के कण–कण में भगवान है ।।

वेद पुराण ऋषि मुनियों नें उनका ही गुणगान किया,
ओम नाम की महा शक्ति का अन्तर में पहचान किया ।
मनसा वाचा और कर्मणा शरणगहे कल्यान है ।।
कण–कण में भगवान विश्व के कण–कण में भगवान है ।।

जिन्दगी

जूझना जिन्दगी से यही जिन्दगी,
हार जिसने भी मानी वही मर गया ।

प्याले पी के अमी के मरे सैंकडो,
पी गरल जो स्वयं को अमर कर गया ।।
चैन आराम से जो भी जीते रहे,
खून असहायों के जम के पीते रहे ।
बेसहारों के जो भी सहारे बने,
वह फतह अपना जीवन समर कर गया ।।

दर्द होता है क्या यह सभी जानते,
पर हैं विरले कि जो इसको हँस बांटते ।
बाटने वाले धन धूल मे मिल गए,
राम नानक दधीची का यश रह गया ।।
जूझना जिन्दगी से यही जिन्दगी,
हार जिसने भी मानी वही मर गया ।।

श्वास कितनी मिली कौन जाने किसे,
व्यर्थ जाने न दो तात क्षण भर इसे ।
नाम इतिहास में उनका गाया गया,
प्यार वातावरण जो सृजन कर गया,
जूझना जिन्दगी से यही जिन्दगी,
हार जिसने भी मानी वही मर गया ।।



आह्वान समष्टि से

तुम नहीं जो आओगे तो और कौन आएगा ।
तुम नहीं बचाओगे तो कौन फिर बचाएगा ।।

कौन पा सका है क्या खंजरो के जोर से,
अमन का फल लगा नहीं कभी कुकृत्य शोर से ।
काल गाल फाडता रहे तो चैन है कहाँ,
श्वांस श्वांस जब वेहाल हो तो शैन है कहाँ ।
कौन श्रम से शान्ति की भागीरथी बहाएगा ।।
तुम नहीं जो आओगे तो और कौन आएगा ।

चालियो की चाल से सतर्कता रहे सदा,
मकडी अपनीं जाल में उलझती है यदाकदा ।
शत्रुओं से सावधान रहना अपना काम है,
आलसी हुए कहीं तो काम सब तमाम है ।
दुष्ट अपनी चाल तो अनवरत चलाएगा ।।
तुम नहीं जो आओगे तो और कौन आएगा ।

अपने श्वांस जाने क्यों विपाक्त गंध छोडते,
अपने हाथ अपनी गर्दनों को क्यों मरोडते ।
अपने पग नियंत्रणों की बाड क्यों है तोडते,
भाई–भाई के हैं क्यों कपाल आज फोडते ।
हृदय–हृदय में कौन स्नेह भावना जगाएगा ।।
तुम नहीं जो आओगे तो और कौन आएगा ।।

मित्र भावना की तारतम्यता को क्या हुआ,
भारतीय बाग की सुरम्यता को क्या हुआ ।
भगत सिंह आजाद की धरा को क्या है हो गया,
सुभाप खो गया कहाँ कहाँ प्रताप खो गया ।
कौन गाँधी नेहरू के क्रम को फिर चलाएगा ।।
तुम नहीं जो आओगे तो और कौन आएगा ।

•

चम्बल माता

हे चम्चल माता महिमा तेरी है अपार ।
वन बागों में ग्रामों नगरो में शीतल जल देती रहती,
निर्जन मे भी प्रवाह बनकर तूँ झर झर झर बहती रहती ।
जड चेतन चर औ अचर सभी गाते हैं तेरी मधुर राग ।।
हे चम्बल माता महिमा तेरी है अपार ।।

गॉधी सागर राणा प्रताप सागर तुझमें लहराता है,
यह वीर जवाहर भी अपनी छवि छटा नवीन दिखाता है ।
निर्मित इस पर जो विद्युत गृह दिखलाता है अब चमत्कार ।।
हे चम्चल माता महिमा तेरी है अपार ।।

इससे विद्युत पैदा करके हम शत शत लाभ उठाते हैं,
विस्तृत करके चहुँ ओर इसे उद्योग प्रकाश बढाते हैं ।
दारिद्र दैन्य दुख दूर हुआ अब सुख वैभव होगा प्रसार ।।
हे चम्चल माता महिमा तेरी है अपार ।।

कोटा मे जो नगराज सदृश जो चम्चल बांध बनाया है,
दाईं–बांई विशाल नहरों का दिव्य स्वरूप दिखाया है ।
इसमें विकास नें हरास का जड फेंका है बिलकुल उखार ।।
हे चम्बल माता महिमा तेरी है अपार ।।

जो तप्त धरा थी वर्षो से जिनके फल फूल पडे सूखे,
जिसने किंचित बहार मधुमय जीवन में कभी नहीं देखे ।
उसनें भी शान्त पिपासा की पाकरके तेरा मृदुल धार ।।
हे चम्चल माता महिमा तेरी है अपार ।।

सूखी खेती कोटा बूँदी शिवपुर की अब लहराएगी,
हर ऋतुएं हरित धरा बन कर कृषको की कृषि बढाएगी ।

मेघ सब कहाँ विलीन हो गए

दिगृदिगन्त मैं निहारता रहा मेघ सब कहां विलीन हो गए
बूँद–बूँद को धरा तरस गई मूँग मोठ सब मलीन हो गए

जेठ हो के रूष्ट सा चला गया अरु आपाढ कुछ न नेह दे सक
श्रावणी की वाटिका झुलस गई श्याम मेघ भी न मेह दे सका
डाल–डाल झूमना विसर गई वृक्ष–वृक्ष पातहीन हो गए
दिगृदिगन्त मैं निहारता रहा मेघ सब कहां विलीन हो गए

नवी नवी दुल्हन सी जो सजी लगे मौसमे वहार सब सिमट गई
वेग युक्त आंधियो के भय से ज्यों चॉदनी भी चॉद से लिपट गई
मरूधरा की श्याह चूनरी हुई कोकिला के बन्द बीन हो गए
दिगृदिगन्त मैं निहारता रहा मेघ सब कहा विलीन हो गए

दादुरों का शोर सन्न हो गया झींगुरों का गान जाने क्या हुअ
बाग में न मोर नाचते कहीं पपीहरो का तान जाने क्या हुआ
विहंग चहचहाते मौन हो गए सर तडाग जैसे दीन हो गए ।
दिगृदिगन्त मैं निहारता रहा मेघ सब कहां विलीन हो गए

सहेलियों में छमछमाहटें नहीं मृगो के नयन में भी अश्रुधार है
हरीतिभा से जो सजे ऑचल कभी उन्ही में पडी अस्थि की कतार है
पनघटों को पी गया है पीवणा सूख सीवणा महीन हो गए ।
दिगृदिगन्त मैं निहारता रहा मेघ सब कहां विलीन हो गए

काचरी मतीरे होम हो गए तिल गवार बाजरी जरी अभी
जैसे सर कुलिश पडा कपास के तुम्बी बोरिया बरी अभी अभी
खुम्पियों के भ्रूण सब विखर गए ज्वार जैसे प्राणहीन हो गए ।
दिगृदिगन्त मैं निहारता रहा मेघ सब कहां विलीन हो गए ।

ऐसा विकास का है प्रयास स्वर्गादिक भी देगा उतार ॥
हे चम्चल माता महिमा तेरी है अपार ॥

उन मुख्य अधीक्षण अधिशापी अभियन्ताओं को धन्यवाद,
उन श्रमिकों को भी धन्यवाद उन प्राणों को भी धन्यवाद ।
जिसने यह पूर्ण प्रतिज्ञा की पाकरके तेरा सलिल धार ॥
हे चम्चल माता महिमा तेरी है अपार ॥



मुक्तक

बात बनती है कर करके कुछ दिखाने से,
सीख लेनी है तो ले लीजिए परवाने से ।
बुलन्द हौसले वाले जमॉं बदल देते,
जमाना हमसे है, हैं हम नहीं जमाने से ।



मेघ सब कहाँ विलीन हो गए

दिग्दिगन्त मैं निहारता रहा मेघ सब कहां विलीन हो गए ।
बूँद-बूँद को धरा तरस गई मूँग मोठ सब मलीन हो गए ।।

जेठ हो के रूष्ट सा चला गया अरु आषाढ कुछ न नेह दे सका,
श्रावणी की वाटिका झुलस गई श्याम मेघ भी न मेह दे सका ।
डाल-डाल झूमना विसर गई वृक्ष-वृक्ष पातहीन हो गए ।।
दिग्दिगन्त मैं निहारता रहा मेघ सब कहां विलीन हो गए ।

नवी नवी दुल्हन सी जो सजी लगे मौसमे बहार सब सिमट गई,
वेग युक्त आंधियों के भय से ज्यों चॉदनी भी चॉद से लिपट गई ।
मरूधरा की श्याह चूनरी हुई कोकिला के बन्द बीन हो गए ।।
दिग्दिगन्त मैं निहारता रहा मेघ सब कहां विलीन हो गए ।

दादुरों का शोर सन्न हो गया झींगुरो का गान जाने क्या हुआ,
बाग मे न मोर नाचते कहीं पपीहरो का तान जाने क्या हुआ ।
विहंग चहचहाते मौन हो गए सर तडाग जैसे दीन हो गए ।।
दिग्दिगन्त मैं निहारता रहा मेघ सब कहां विलीन हो गए ।

सहेलियों मे छमछमाहटें नहीं मृगों के नयन मे भी अश्रुधार है,
हरीतिभा से जो सजे ऑचल कभी उन्ही मे पडी अस्थि की कतार है ।
पनघटों को पी गया है पीवणा सूख सीवणा महीन हो गए ।।
दिग्दिगन्त मैं निहारता रहा मेघ सब कहां विलीन हो गए ।

काचरी मतीरे होम हो गए तिल गवार बाजरी जरी अभी,
जैसे सर कुलिश पडा कपास के तुम्बी बोरिया बरी अभी अभी ।
खुम्बियो के भ्रूण सब बिखर गए ज्वार जैसे प्राणहीन हो गए ।।
दिग्दिगन्त मैं निहारता रहा मेघ सब कहां विलीन हो गए ।

फोग को है रोग जैसे लग गया रूई शुई की दिल की दिल में रह गई,
जो बची थी डाल पात एक दिन भेट सब भतूडियों को चढ गई ।
ऑधियों के खा थपेडे खेजडी देखो कैसे तन से खीन हो गए ।।
दिग्‌दिगन्त मैं निहारता रहा मेघ सब कहा विलीन हो गए ।

काकडो पे आकडे खडे खडे समग्र दृश्य देख लहलहा रहे,
दुष्ट देखकर किसी को ज्यों दुखी मुस्करा रहे हैं गीत गा रहे ।
हर किसान त्रस्त पस्त इस तरह नीर हीन सर में जैसे मीन हो गए ।
दिग्‌दिगन्त मै निहारता रहा मेघ सब कहां विलीन हो गए ।



नारी तेरा इतिहास बड़ा मर्यादित है

नारी तेरा इतिहास बडा मर्यादित है,
अब यह मर्यादा तुमको आज निभानी है ।।

फिर तुम्हें जागना होगा व्यर्थ की निंद्रा से,
तुम पर है हुआ जमाने से मनमानी है ।
जब दशरथ के रथ की धुरी निष्काम हुई,
तूने ही निज अगुली से उसे सम्हाला था ।
अपने सतीत्व से ही तूने यम झोली से,
प्रिय सत्यवान का पावन प्राण निकाला था।
तुममे दुर्गा काली सरस्वती भवानी है ।।
अब यह मर्यादा तुमको आज निभानी है ।।

तुम सीता हो लक्ष्मी हो अम्बे माता हो,
तुम राम कृष्ण गाधी नेहरू निर्माता हो ।
तुम गंगा यमुना बन जग प्यास बुझाती हो,
तुम ही राधा बन ब्रज में रास रचाती हो ।
अब सीख प्रेम की सबको आज सिखानी है ।।
अब यह मर्यादा तुमको आज निभानी है ।।

रण खेतो में भी निज कौशल दिखलाती हो,
निःशंक जूझ अरि से तलवार चलाती हो ।
तुम केवल सुख सहभागिनि नहि कहलाती हो,
विपदा काले भी पति का साथ निभाती हो ।
तुमसे ही यह जगजीवन है अरू पानी है ।।
अब यह मर्यादा तुमको आज निभानी है ।।

कुण्ठाओं को धर ताख विश्व में नाम करो,
तुम साक्षरता से जुडो बढो कुछ काम करो ।

अत्याचारो से कह दो तुम विश्राम करो,
अपनी युक्ति से अपना घर सुख धाम करो ।
अब निज अतीत गौरव गाथा दुहरानी है ।।
अब यह मर्यादा तुमको आज निभानी है ।।

•

मुक्तक

तार से तार मिल जाए तो फिर कहना क्या है,
यार से यार मिल जाए तो फिर कहना क्या है ।
प्यार की राह बडी मुश्किल है, बडी मुश्किल है,
प्यार से प्यार मिल जाए तो फिर कहना क्या है ।

•

परार्थ बोलता रहे

कुछ हमें दो आप कुछ हम दे आपको,
लेन देन मे परार्थ बोलता रहे ।

आपदाऐं आपसी हँस के बॉट ले,
चार दिन की जिन्दगी ऐसे काट ले ।
वर्तमान स्नेह भाव घोलता रहे ।।
लेन देन में परार्थ बोलता रहे ।।

राह में न प्रेम भाव की कमी रहे,
मुस्कराती ऑख मे बनी नमी रहे ।
मन सदा स्वयं के कृत्य तोलता रहे ।।
लेन देन में परार्थ बोलता रहे ।

अपना यह चमन हमे है इस चमन से प्यार,
जब भी वक्त आया इस पर हम हुए निसार ।
समय का आइना रहस्य खोलता रहे ।।
लेन देन में परार्थ बोलता रहे ।।

जाति पाति ऊँच नीच व्यर्थ बात है,
जहान में मनुष्य की तो एक जात है ।
कटोरियां कलुप की काल ढोलता रहे ।।
लेन देन मे परार्थ बोलता रहे ।।

छल प्रपंच द्वेष भाव कर दे हम दफ़न,
वतन की आन हेतु सर पै बांध ले कफ़न ।
वो हाथ क्या जो सत्य को टटोलता रहे ।।
लेन देन में परार्थ बोलता रहे ।।



गगन

मैं गगन हूँ देखता सब कुछ मगर,
हर जगह हर बात पर बोला नहीं करता ।

श्वॉस हमसे लेके ही कुछ लोग है,
हम पै गुर्राते वडे अभिमान से ।
यह नहीं मालूम शायद है उन्हें,
मै अभी लाया उहें शमसान से ।
मै न चाहूँ तो पलक झपती नहीं,
भेद पर अपना कभी खोला नहीं करता ।।
मैं गगन हूँ देखता सब कुछ मगर,
हर जगह हर बात पर बोला नहीं करता ।

मैने देखा शाम को रोई थी सुखिया द्वार पर,
लख जनक को अश्रुपूरित नयन से आते हुए ।
प्रश्न चिन्हों से भरा हृदय पर,
नयन में मुस्कान सी लाते हुए ।
नर पिशाची भेडिए चैतन्य हो,
काल ऐसो को कभी छोडा नहीं करता ।।
मैं गगन हूँ देखता सब कुछ मगर,
हर जगह हर बात पर बोला नहीं करता ।

देख ले कोई अगर कुछ होश से,
कौन बच पाया मेरे आगोश से ।
मांगता हूँ मैं समन्दर से सतत सबके लिए,
हर किसी के सामने झोला नहीं करता।
मैं गगन हूँ देखता सब कुछ मगर,
हर जगह हर बात पर बोला नहीं करता ।

थूकना चाहा है मुझ पर गर कोई,
उल्टा ही उस पर पडा आकर स्वत.।
हर किसी से प्यार जिसने है किया,
है वहीं सम्मान पाया हर जगह ।
अपने कुकृत्यों से चराचर त्रस्त है,
मैं किसी के पात्र विष घोला नहीं करता ।।
मैं गगन हूँ देखता सब कुछ मगर,
हर जगह हर वात पर वोला नहीं करता ।



विश्व बंधुता

हम विश्वबन्धुता प्रसार करते जाएंगे ।
कदम हमारे इस तरह से बढते जाएगे ।।

हो के स्वार्थ सिक्त ना कहीं उलझ लिया,
मिला है राह में उसे अपना समझ लिया ।
हर किसी से दिल से प्यार करते जाएंगे ।।
हम विश्वबन्धुता प्रसार करते जाएंगे ।।

नानक गोविन्द ग्राम में रहे सदा अमन,
विनम्रता विकास से प्रयास हो नमन ।
स्वधर्महेतु जॉ निसार करते जाएंगे ।।
हम विश्व बन्धुता प्रसार करते जाएंगे ।।

हर हाल में खुश रहें यही स्वभाव हो,
छद्म द्वेष राग से हमें दुराव हो ।
खिजां को हम बहार में बदलते जाएंगे ।।
हम विश्व बंन्धुता प्रसार करते जाएंगे ।।

पुराण वेद अपने प्रेम के प्रतीक हैं,
ये जिन्दगी चलाने के सुरम्य लीक है ।
सॅवार कर मनुष्यता सॅवरते जाएंगे ।।
हम विश्व बन्धुता प्रसार करते जाएगे ।।

•

बसन्त

आ गया बसंत तो बहार आ गई ।
दिशा दिशा में मस्ती औ मल्हार आ गई ।।

प्रेम प्रस्फुटित हुआ है रोम रोम से,
सगाई हो रही है ज्यों धरा की व्योम से ।
रंगीली रंग रंग की फुहार आ गई ।।
आ गया बसन्त तो बहार आ गई ।।

कसमसा रही चने मटर की थैलियाँ,
गुलाब के शबाब में भ्रमर की रैलियाँ ।
कोकिला की कूक में निखार आ गई ।।
आ गया बसंत तो बहार आ गई ।।

तीसी नीली सारी ओट झाकने लगी,
सरसों पीले आँचलो से ताकने लगी ।
नज़र–नजर मे मस्तियों की धार आ गई ।।
आ गया बसन्त तो बहार आ गई ।।

धणी की बालियो मे भी शबाब आ गया,
समीर मे मस्ती बेमिशाल आ गया ।
पपीहरों की पी कहाँ पुकार आ गई ।।
आ गया बसंत तो बहार आ गई ।।



लाडेसर

हे भारत माँ के लाडेसर तुमसे सब आशाएँ है ।
रोक सके जो राहे तेरी ऐसी क्या बाधाएँ हैं ।।

भारत दर्शन नें युग युग से गीत प्रेम के गाया है,
यह पावन माटी अपनी निज धर्म परार्थ दिखाया है ।
हमको छलने वाली अब तक बनी नहीं छलनाएँ है ।।
हे भारत माँ के लाडेसर तुमसे सद आशाएँ है ।

चिर गरीयसी धरा भारती सकल विश्व से न्यारी है,
हम इसके प्यारे हैं यह हमको प्राणों से प्यारी है ।
तुमसे नव निर्माण देश का नव नव अभिलाषाएँ हैं ।।
हे भारत माँ के लाडेसर तुमसे सब आशाएँ है ।।

कभी क्लेश की भँवर देश कीनाव नहीं फसने देना,
लगा प्राण की बाजी मित्रों नाव किनारे तक खेना ।
कोटिक लाल तिहारे संग में औ कोटिक ललनाएँ हैं ।।
हे भारत माँ के लाडेसर तुमसे सब आशाएँ है ।।

कलियों ने फूलों ने सब पै निज सुवास बरसाया है,
युगों–युगों से हमनें सुखमय वातायन सरसाया है ।
बेला जूही चमेली सब मिल बनी नेक मालाएँ है ।।
हे भारत माँ के लाडेसर तुमसे सब आशाएँ है ।।

•

धरा महान है

क्यों न हम करें गुमान इस धरा की शान पर ।
लगाने वालों ने लगा दी बाजी अपनी जान पर ।।

गंगो यमुन में स्नेह का सलिल सदा बहे,
यहाँ पै भाई–भाई से मिलके सब रहे ।
ईमान है सभी का जहाँ गीता पर कुरान पर ।।
क्यों न हम करें गुमान इस धरा की शान पर ।।

राम कृष्ण की जमीं ए ख्वाजा की ज़मीन है,
सरगमी पवन यहाँ की मौसमें हसीन है ।
विश्व मुगध है यहाँ की कोयलों की तान पर ।।
क्यों न हम करें गुमान इस धरा की शान पर ।।

विवेकानन्द बुद्ध से गुरू यहाँ पै हो गए,
समष्टि के हितार्थ जो समत्व बीज बो गए ।
सुकृत्य इस धरा का है जहान की जबान पर ।।
क्यों न हम करें गुमान धरा की शान पर ।।

इस धरा ने बात जो कही वो ब्रह्म लीक है,
सत्यता है उसमे वह अकाट्य है सटीक है ।
चकित है विश्व गंग की पवित्रता महान पर ।।
क्यों न हम करें गुमान इस धरा की शान पर ।।



प्यार ही प्यार

जो हरे आन वह धन मत देना ।
जो हरे शान वह धन मत देना ।।

ऐसे धन से तो है निर्धन ही भला,
जो हरे मान वह धन मत देना ।

हमने कब ऐसा तुझसे धन माँगा,
जो हरे जान वह धन मत देना ।

हमने सद्भावना की तुझसे प्रार्थना की है,
जो मचादे कहीं तूफान वह धन मत देना ।

चैन से सब जिए उस सीख का धन दे मुझको,
करे चमन को शमशान वह धन मत देना ।

सबमें बन्धुत्व बढे सबमें बढे स्नेह सदा,
बन जाय अपने भी अनजान वह धन मत देना ।

हम जहाँ हो वहां हो प्यार ही प्यार चारों तरफ,
जो करे घर को भी वीरान वह धन मत देना ।



सुरभित उद्यान

आओ हम सब मिलकर इक सुरभित उद्यान बनाएँ ।।
मुस्काए हर फूल यहाँ पर हर कलियाँ मुस्काएँ ।।

बेला जूही गुलाब चमेली कुमुंद केवड़ा सारे,
चम्पा गेंदा सूर्यमुखी औ लगे मोगरा प्यारे ।
स्नेह सुरभि मय वातायान मे रोम–रोम हरषाएँ ।।
आओ हम सब मिलकर इक सुरभित उद्यान बनाएँ ।।

ऊँच नीच का भेद भुलाकर सबमे प्रीति प्रसारें,
देश धर्म उत्थान के लिए हम सर्वस्व निसारे ।
अपनापन सबमें पनपाकर अपने हृदय लगाएँ ।।
आओ हम सब मिलकर इक सुरभित उद्यान बनाएँ ।।

धर्म–कर्म के स्थल अपने सबको ही है प्यारे,
सभी लाल है भारत माँ के सब आंखों के तारे ।
मातृ प्रेम का हर दिल में आओ नव दीप जलाएँ ।।
आओ हम सब मिलकर इक सुरभित उद्यान बनाएँ ।।

अपनी हो चौपाल कि जिस पर गीत प्रेम के गाएँ,
वैमनस्यता मिटे परस्पर सबको गले लगाएँ।
सबमें अपनी बांट खुशी घर–घर खुशहाल कराएँ ।।
आओ हम सब मिलकर इक सुरभित उद्यान बनाएँ ।।

•

मेरे मीत

तुम प्रत्यक्ष आओ या न आओ मेरे मीत,
अन्तराल में हमारे आ गए हो तुम ।

कौन पा सका तुम्हारा आदि और अन्त,
इस अनन्त में तुम्हारा रूप ह अनन्त ।
सरगमो की श्वॉस में समा गए हो तुम ।।
अन्तराल में हमारे आ गए हो तुम ।।

पास रहके भी तूँ रहते जाने कितनी दूर,
तुमको देखने का है अभी कहा शऊर ।
जूठे बेर स्नेह साग खा गए हो तुम ।।
अन्तराल मे हमारे आ गए हो तुम ।।

धरती आसमान जाने सारा दिगृदिगन्त,
पूरी वाटिका के हो एक तूँ महन्त ।
खिजा मे भी बहार बन के छा गए हो तुम ।।
अन्तराल में हमारे आ गए हो तुम ।।

तारे सूर्य चॉद में चमक तुम्ही से है,
हरेक पुष्प में दमक महक तुम्हीं से है ।
बृज में आ के बन्सरी बजा गए हो तुम ।।
अन्तराल में हमारे आ गए हो तुम ।।



सत्यपथ

है वही पुरुषार्थी जो सत्य पथ चलता रहे ।
धैर्य शील सनेह के रथ बैठ कर बढता रहे ।।

सौख्य मे फूले नहीं विपदा पड़े रोवे नहीं,
कण्टको पर गमन में भी धीरता खोवे नहीं ।
शत्रु जिसका देख साहस हाथ बस मलता रहे ।।
है वही पुरुषार्थी जो सत्य पथ चलता रहे ।।

चूमती है सफलताऐं चरण ऐसे वीर की,
भय कभी खाते न जो सर लटकती शमशीर की ।
राष्ट्र के उत्थान हित नित नव यतन करता रहे ।।
है वहीं पुरुषार्थी जो सत्य पथ चलता रहे ।।

मान औ अपमान सब कुछ देश हित स्वीकार हो,
यहॉ तक निज धर्म पथ में मौत अंगीकार हो ।
ध्येय हो वट वृक्ष अपना फूलता फलता रहे ।।
है वही पुरुषार्थी जो सत्यपथ चलता रहे ।।

जागरण के गीत गाना ही सदा भाता जिसे,
काल का दुःष्चक्र किंचित छू नहीं पाता जिसे ।
जो तिमिर को प्रान का दीपक जला हरता रहे ।।
है वही पुरुषार्थी जो सत्य पथ चलता रहे ।।



कोई कहीं न लूटे

वर्षों का श्रृंगार किसी का पल मे कहीं न रूठे ।
सजा सजाया गुलशन अपना कोई कहीं न लूटे ।।

विविध रग हैं इस बगिया में विविध बहे वातायान,
विविध ग्रन्थ गीता कुरान है गुरू वाणी रामायन ।
स्नेह सूत में बधा बधाया तार कहीं ना टूटे ।।
सजा सजाया गुलशन अपना कोई कहीं न लूटे ।।

इस गुलशन की खातिर हिलमिल दी सबने कुर्बानी,
पूरन सिह हमीद सभी नें की न्यौछावर जवानी ।
तुलसी सूर कबीर और रसखानी रहे अनूठे ।।
सजा सजाया गुलशन अपना कोई कहीं न लूटे ।।

वक्त पड़े तो अपने हाथों में ले ले तलवारें,
सदा सगठित शक्ति शौर्य से अपना वतन सँवारें ।
धाम धाम से खेत खेत से स्नेहिल सरिता फूटे ।।
सजा सजाया गुलशन अपना कोई कहीं न लूटे ।।

वीर प्रसूता पावन इस धरती के हम सब जाए,
वतन के लिए मिटे पलो मे पल भर में फिर आए ।
वैमनस्यता जो फैलाए बाँध उसे इक खूँटे ।।
सजा सजाया गुलशन अपना कोई कहीं न लूटे ।।



मानवता का विनाश

काल देवता मांग रहे हैं नित मानव का भोग ।
क्यो मानवता के विनाश पर तुले हुए हैं लोग ।।

क्यों विस्तार वाद पनपे क्यों हो दुवैत पर कब्जा,
पूरा विश्व यही चाहे ईराक यहॉ से हट जा ।
परउसने कब सुनी किसी की जिद पै अडा हुआ है,
आज धुंआ ही धुंआ हुआ सकट में पडा हुआ है ।
बिना कुवैत से हट नहीं यह मिटने वाला रोग ।।
क्यों मानवता के विनाश पर तुले हुए हैं लोग ।।

ईरानी या अमरीकी दोनों धरती के बेटे,
प्रेम शान्ति से करें वार्ता अपना शस्त्र समेटे ।
सदा हार में जीत छिपी है और जीत में हार,
मानवता गर मिट जाए जडवत होगा ससार ।
विश्व वाटिका उजड गई तो राज करेगा सोग ।।
क्यों मानवता के विनाश पर तुले हुए हैं लोग ।।

मत हिरोशिमा नागासाकी घटना फिर दुहराओ,
लाखों लोगो के जीवन को मत फिर पंगु बनाओ ।
मालिक ऐसी करो प्रेरणा मिट जाए संग्राम,
खुशी खुशी से अब कुवैत से हट जाए सद्दाम ।
संकट स्वतः मिटे गर हो सद्‌भावो का विनयोग ।।
क्यों मानवता के विनाश पर तुले हुए हैं लोग ।।

•

प्रकृति और पुरूष

नेह हमको दिया है किसी ने,
उनको विश्वास मैने दिया ।
जिन्दगी स्वप्नवत है चराचर,
झूठ सच का नहीं बोध कोई ।
पल के हैं झोपडी भी महल भी,
देख ले शोध कर करके कोई ।
स्वप्न टूटे है जब जब किसी के,
कुछ सपन खास मैने दिया ।। नेह हमको . ।

कब खिले बाग में फूल सारे,
हर कली कब यहॉ मुस्कराई ।
कब भ्रमर सारे फूलो पै आए,
कब सभी प्रात ने गीत गाई ।
रागिनी जब भी बाधित हुई है,
इक नई राग मैने दिया ।। नेह हमको... ।।

पूरे कब होते अरमान सारे,
सेज पूरी सजी कब यहॉ है ।
साज पूरे बजे कब किसी के,
हार पूरे गुथे कब यहॉ है ।
श्वांस ने जब भी धोखा दिया है,
फिर नई श्वांस मैने दिया ।। नेह हमको . ।।

पाएं सब मंजिले अपनी--अपनी,
बस यही चाह मेरी रही है ।
राह जो जाए नेकी नमन घर,
बस यही राह मेरी रही है ।
जब भी पतझड मे तरू लडखडाए,
उनको मधुमास मेने दिया ।। नेह हमको.. ।।



संकल्प

चन्दा बदले सूरज बदले बदले यह जग सारा ।
देश धर्म पर मर मिटनें का हो सकल्प हमारा ।।

वीर शहीदों नें सींचा है शोणित से यह क्यारी,
इसीलिए इसकी सुगन्ध है सारे जग से न्यारी ।
मंत्र मुग्ध हो जाते है सब इस बगिया मे आकर,
स्नेह प्रेम सद्भाव देख कर सबका आदर पाकर ।
भ्रमितों को सतपथ लाता है ध्रुव बनकर ध्रुवतारा ।।
देश धर्म पर मर मिटने का हो संकल्प हमारा ।।

जितने भी है यहॉ सभी हैं घर के भाई–भाई,
बिना भेद के भारत मॉ नें सबको दूध पिलाई ।
इक घर जैसे सब हिलमिल कर यहॉ जानते रहना,
एक दूसरे के सुख दुख में हॅसकर जीना मरना ।
भारत के हम सब प्यारे यह भारत हमको प्यारा ।।
देश धर्म परमर मिटने का हो सकल्प हमारा ।।

मिले परस्पर हम ऐसे जस मिले दूध में पानी,
गीत एकता के गाऍ हम बोले मीठी बानी ।
धोखा औ छल छद्म सभी को घर से दूर भगाऍ,
सद्भावों के नीरद से सुख शान्ति मेह बरसाए ।
अखिल विश्व में वेद ज्ञान का फैलाए उजियारा ।।
देश धर्म पर मर मिटने का हो संकल्प हमारा ।।

हरा धवल केशरिया झण्डा कभी न झुकने पाए,
मान सहित यह इस वसुधा पर लहर लहर लहराए ।
इसकी गरिमा में अपनी गरिमा यह सारे जाने,
दाव लगे तो आन बान पर मर मिटने की ठाने ।
हमसे टक्कर लेने वाला सदा समर मे हारा ।।
देश धर्म पर मर मिटने का हो संकल्प हमारा ।।

•

ईमान

राम औ रहीम है इसी जमीन के,
कृष्ण औ करीम है इसी जमीन के ।
विचार सूत्र मे दे रग हम समान का,
आओ मिल के हाथ थाम ले इमान का ।।

दोनों को लडाने वाले चाल चल रहे,
ऐसे तत्त्व कुछ स्वतत्र काम कर रहे ।
बिगाड दे स्वरूप ऐसे बेईमान का ।।
आओ मिलके हाथ थाम ले इमान का ।।

सम्प्रदायवाद को दफन करें यहॉ,
चमन मे हर जगह रमन अमन करे यहॉ ।
मिसाल हिन्द एक है सरे जहान का ।।
आओ मिलके हाथ थाम लें इमान का ।।

हमारी एकता तले दिल का साज है,
हमे हमारी मित्रता पै अब भी नाज है ।
है फक्र हमको अपने तिरंगे निशान का ।।
आओ मिलके हाथ थाम लें इमान का ।।

मन्दिरों मे रार क्यों हो मस्जिदो मे शोर,
सभी रहे अपने पंचशील मे विभोर
वतन की आन पर करें न खौफ जान का ।।
आओ मिलके हाथ थाम लें इमान का ।।



स्नेहिल धरा

स्नेहिल धरा स्नेह को जानती है ।
गली गॉव की अब भी पग थामती है ।।

सदा सत्य पलता इन्हीं अंचलों में,
ये छल छद्म को तो न पहचानती है ।
स्नेहिल धरा स्नेह को जानती है ।
नहीं द्वेष कोई नहीं वैर कोई,
कि हर कौम को यह धरा पालती है ।
स्नेहिल धरा स्नेह को जानती है ।

निज कोख से जाए बेटे से बढकर,
पराए को पन्ना यहाँ मानती है ।
स्नेहिल धरा स्नेह को जानती है ।
हर इक कण में देखा यहाँ भाईचारा,
यही भावना शत्रु को सालती है ।
स्नेहिल धरा स्नेह को जानती है ।

यहाँ जान से पहले है आन प्यारी,
नई चूडियाँ भी खडग धारती है ।
स्नेहिल धरा स्नेह को जानती है ।
न्यौछावर हुए हँस के बेटे यहाँ के,
वतन हेतु माँ जब भी तन मांगती है ।
स्नेहिल धरा स्नेह को जानती है ।

नहीं कोई भूखा नहीं कोई प्यासा,
ये ककडी मतीरे से फल घालती है ।
लिपट बाजरा मूंग काचर लताएं,
धवल चांदनी में मजे मारती है ।
स्नेहिल धरा स्नेह को जानती है ।



गज़ल बनती है

दर्द जब कोई गहराए तो गज़ल बनती है ।
जख्म जब कोई सहलाए तो गजल बनती है ।।

बहुत दिन बीत गए हो खबर उनकी न मिले,
ऐसे में चुपचाप वो आए तो गजल बनती है ।

वफा जिन पर करे उनकी वफा में भी हो वफा,
मस्ती गुलिस्तान मिली हो तो गजल बनती है ।

पास रहते हैं बहुत आसपास रहते हैं,
पर कोई दिल के पास हो तो गजल बनती है ।

यों तो गुल खार पर लिख लेते हैं लिखने वाले,
पर कोई फूल मुस्कराए तो गजल बनती है ।

ईद बकरीद दशहरा हो या दीवाली हो,
सभी मिल जुल के मनाए तो गजल बनती है ।

मिला के नैन झुके हों और उठ के झुक जाएँ,
इस तरह कोई शर्माए तो गजल बनती है ।।



क्या किया जाए

ऑखों ऑखों से कोई दिल मे उतर आया है,
इस तरह दिल गया चोरी तो क्या किया जाए ।

जिया बेचैन हो गया कहीं ना लागे जिया,
ऐसे हालात में कैसे कहीं जिया जाए ।

ज़ख्म गर एक हो तो उसका कर देते इलाज,
ज़ख्म पर जख्म है कैसे उसे सिया जाए ।

वादे करते भरी महफिल में मुकर जाते हैं,
दिले नादां बता किस पर वफा किया जाए ।

अमीं औ विष के दोनो प्याले पडे हैं आगे,
बडी उलझन है बताओ किसे पिया जाए ।

दिल है एक मांगने वाले हैं कितने,
बता ऐ दिल कि अब तुझको किसे दिया जाए ।

छोड चोरी का चलन प्यार से मुहब्बत से,
क्यों न इस दिल को खुशी से दिया लिया जाए ।

•

मैं बादल हूँ

मै बादल हूँ मुझको तो सारी धरती से प्यार है ।
हित अनहित समझा जाए तो यह जीवन का सार है ।।

दुर्जन सज्जन दोनो ही को मैने जीवनदान दिया,
कभी न अपने ऊपर मैने किंचित भी अभिमान किया ।
मेरा क्या है देने वाला तो कोई दातार है ।।
मैं बादल हूँ मुझको तो सारी धरती से प्यार है ।।

ताल तलइया झरने सरिता राह हमारी तकते हैं,
हम इनको पावन सलिला से समय–समय पर भरते हैं ।
नेह मेह का पावन रिश्ता ही अपना व्यवपार है ।
मैं बादल हूँ मुझको तो सारी धरती से प्यार है ।।

मौका पाते लोग धरा के अपना घर भर लेते हैं,
चर औ अचर दीन बेवस जिसको चाहे चर लेते हैं ।
खून पसीना से श्रमिको के चलती इन्की कार है ।।
मैं बादल हूँ मुझको तो सारी धरती से प्यार है ।।

मानव मानव को पहचाने मानवता सरसाए,
हृदय–हृदय से द्वेष मिटाकार स्नेहिल भाव जगाए ।
करें आत्म दर्शन सबमें तो यही स्वर्ग ससार है ।।
मै बादल हूँ मुझको तो सारी धरती से प्यार है ।।

•

प्यार लुटाते चलो

दर्द जो भी मिले उसका गम मत करो,
प्यार जो भी मिले वह लुटाते चलो ।
मत बनो सृष्टि स्रष्टा मेरे मित्रवर,
बनके द्रष्टा यहाँ आया जाया करो ।
यह चमन है अजब इसकी बातें अजब,
जो भी दीखे न सच, सच जो दीखे नहीं ।
इसमें कैसे रहें इसमें कैसे चलें,
यह चलन तो अभी हमने सीखे नहीं ।
जाल जंजाल जोखिम जमें हर तरफ,
हर तरफ दृष्टि पैनी घुमाते चलो ।।
प्यार जितना मिले वह लुटाते चलो ।।
लोभ औ मोहमाया यहाँ शत्रु हैं,
इनसे बचकर निकलना मेरे साथियों ।
स्वर्ग सी जिन्दगानी ये दुष्कर करें,
बन्दगी इनसे करना मेरे साथियों ।
ये विरंची महेश्वर को छोडे नहीं,
आंख इनसे बचा पग बढाते चलो ।।
प्यार जो भी मिले वह लुटाते चलो ।।
अर्थ है जिन्दगी का तो परमार्थ है,
वर्ना यह जिन्दगी जिन्दगानी नहीं ।
श्वांस यूं ही हुई बन्द तो क्या हुई,
श्वांस की गर बनी कुछ कहानी नहीं ।
नेकनीयत दया भाव सच सादगी,
इनको जीवन का सहचर बनाते चलो ।।
प्यार जो भी मिले वह लुटाते चलो ।।

•

आमंत्रण उल्लुओं का

जाने क्यों इतिहास के पन्ने भुलाए जा रहे है ।
अपनें हाथों आप ही निज घर उजाडे जा रहे हैं ।

एक ही बोला था उल्लू सारा गुलशन खप गया,
उल्लुओं के काफिले फिर क्यों बुलाए जा रहे हैं ।

हश्र से वाकिफ बखूबी फिर भी स~ खामोश है,
बे वजह जहमत ये सर पर क्यों उठाए जा रहे हैं ।

जालिमों से बचके अब हिरन जाएगा कहॉं,
घर में जब आखेट के जंगल लगाए जा रहे हैं ।

हम तो अपनी बाजरी और मूंग में खुशहाल हैं,
पाठ क्यो स्वप्निल पराठों के पढाए जा रहे हैं ।

फूल फल ईर्ष्या कलह के ही लगे जिस वृक्ष पर,
वृक्ष यह ऑगन हमारे क्यों लगाए जा रहे हैं ।

दादुरो टर टर करो अब तो समाधि तोडकर,
सॉप के घर अब तुम्हारे सर बनाए जा रहे हैं ।

राम इस घर को बचा रहमान तू रहमत करे,
हम तो दोनो दर बराबर सर झुकाए जा रहे हैं ।

•

प्यार दें

हम तुम्हें प्यार दें तुम हमें प्यार दो,
घर का हर आइना मुस्कराता रहे ।
इस चमन में बहारें विचरती रहे,
मस्त हो हर भ्रमर गीत गाता रहे ।
हो न आतंक उपवन में अपने कहीं,
सबमें मैत्री मिलन एकता भाव हो ।
अनमने की लकीरें जो दीखे कहीं,
वह दफन हो तुरत मन में यह चाव हो ।
साथ ऐसे रहे पय में पानी रहे,
फूल सब अपने ढंग मुस्कराता रहे ।।
हम तुम्हे प्यार दे तुम हमें प्यार दो ।।
हर विषमता विसर्जन हृदय की करें,
तीज त्योहार सबके मनाए सभी,
सबमें उल्लास उत्साह उद्दात हों,
बिन झिझक स्नेह से साथ आए सभी ।
राम रहमान की रहनुमाई लिए,
प्रेम का प्लेट घर आता जाता रहे ।।
हम तुम्हें प्यार दें तुम हमें प्यार दो ।।
आन पर मर मिटे धरणा हो सदा,
नेह अपने वतन से कभी कम न हो ।
आपदाओं में हम मुस्कराते रहें,
ये नयन इम्तहां में कभी नम न हो ।
शौर्य गाथाए अपनी चतुर्दिक रहे,
बीन बन्धुत्व हरदम बजाता रहे ।।
हम तुम्हें प्यार दें तुम हमें प्यार दो ।।
बाड ही खेत को चर न जाए कहीं,
इन हवाओं से भगवन बचाना हमें ।

पॉव से पॉव को हम मिला कर चलें,
पाठ समता के स्वामी पढाना हमें ।
मॉ शहीदों की जब भी करे कामना,
हर सुमन मॉ चरण सर चढाता रहे ।।
हम तुम्हें प्यार दें तुम हमें प्यार दो ।।

•

मुक्तक

हम सफर हों न हों सफर पै निकलता हूँ मैं,
पॉव मजबूत कमर कस के निकलता हूँ मैं ।
मुश्किलें सामनें आ आ के लौट जाती है,
नजर मिलाके उनसे हँस के निकलता हूँ मैं ।

•

गाँव की डगर

लोग भागे हैं क्यों कर नगर की डगर,
गॉव की भी डगर कम सुहानी नहीं ।
जिन्दगी यन्त्रवत शहर मे जी रही,
गडगडाहट मशीनों की चारो तरफ ।
गांव पनघट पै छमछम करे पयजनी,
वैसी छम छम शहर बीच आनी नहीं ।।
लोग भागे हैं क्यों कर नगर की डगर ।।

हार स्वर्णिम लिए है अमिलतास तो,
रोहडे पुष्प की लालिमा देखिए ।
बोर ककडी मतीरे रमे रेत मे,
फूल से फोग डाली लगदी देखिए ।
चार सू है शहर में धुँआ ही धुँआ,
गांव में इन धुँओं की निशानी नहीं ।।
लोग भागे हैं क्यों कर नगर की डगर,

झूमते ज्वार में चॉदनी झूमती,
चॉद नहरों नें अठखेलियां कर रहा ।
शहर में कोई बस या ट्रकों के तले,
आ के बेमौत देखो वहाँ म॰ रहा ।
सभ्य शहरों में स्टोव अक्सर फटे,
गॉव मे है अभी यह कहानी नहीं ।।
लोग भागे हैं क्यों कर नगर की डगर ।।

गॉव सुख दुख की चर्चा है चौपाल मे,
भईचारे का स्नेहिल है वातावरण ।
रार झगडा बिना है सभी साथ में,
रहके मिलजुल करे अपना पोषण भरण ।।
चहचहाहट विहंगो की जो गॉव मे,
वैसी धुन की कहीं कोई सानी नहीं ।।
लोग भागे है क्यो कर नगर की डगर ।।

•

कविता

पूजन वन्दन में हार बने वह कविता है,
रणभेरी में तलवार बने वह कविता है ।
वह कविता क्या जो बीच भँवर मे छोड चले,
जो तूफाँ में पतवार बने वह कविता है ।

जिसमे कुछ तात्विक सार मिले वह कविता है,
जहँ परमारथ उपकार मिले वह कविता है ।
वह कविता क्या जो स्वारथ ही स्वारथ जाने,
जो जनहित मे होवे निसार वह कविता है ।

जो स्वामिमान की आन रखे वह कविता है,
जो देश धर्म उत्थान करे वह कविता है ।
वह कविता क्या जो सिर्फ जाम की बात करे,
जो धरती की पहचान करे वह कविता है।

जो दो विछुडो को मिला सके वह कविता है,
जो क्लेश कलह को मिटा सके वह कविता है ।
जो दिल में रखे मलाल नहीं कविता होती,
जो मानवता निर्माण करे वह कविता है ।

जो समय देख श्रृंगार बने वह कविता है,
जो समय देख अंगार बने वह कविता है ।
जो समय देख मधुप्यार भरे वह कविता है,
जो समय देख हुंकार भरे वह कविता है ।

खाई अन्तर की पाट सके वह कविता है ।
दुखियारो के दुख बॉट सके वह कविता है।
जो देश के लिए फूल सेज को ठुकरा दे,
जो कांटो पे दिन काट सके वह कविता है ।



एक इंच कश्मीर न देंगे

अपने हाथो से लिखते है हम अपनी तकदीर ।
न देगे एक इंच कश्मीर न देगे एक इंच कश्मीर ।।

जगह जगह सीमा चौकी पर क्यो करते नादानी,
मेरे प्यार मित्रता को तुमने कमजोरी जानी ।
एक हाथ मे शान्ति हमारे एक भुजा शमशीर ।।
न देंगे एक इंच कश्मीर न देंगे एक इंच कश्मीर ।।

तुम विश्वासघात करते हो यह तेरी पहचान,
देश की खातिर हम न्यौछावर कर देते हैं प्रान ।
यहाँ न चलने पाएगी अब घुस पैठी तदवीर ।।
न देंगे एक इंच कश्मीर न देंगे एक इंच कश्मीर ।।

यहाँ एक माँ के सब बेटे सब हैं भाई–भाई,
शस्य श्यामला भारत माँ ने सबको दूध पिलाई।
वक्त पडा तो सब मिल तेरा सीना देंगे चीर ।।
न देंगे एक इंच कश्मीर न देगे एक इंच कश्मीर ।।

चूर चूर हो जाता हिमगिरि से टकराने वाला,
करो आत्मविश्लेषण पहले भी तो पडा है पाला ।
रणकौशल मे रहे न पीछे कभी यहाँ के वीर ।।
न देंगे एक इंच कश्मीर न देंगे एक इंच कश्मीर ।।

खूब समझते इतना तुम यह काम है लौह चबेना,
टाईगर से तुम लगे चाहने हिल्स टाईगर लेना ।
नजर उठाकर देख ध्वस्त तब शिविरों की तस्वीर ।।
न देंगे एक इच कश्मीर न देगे एक इच कश्मीर ।।

डम–डम–डम डमरू वाले यह प्रलयंकर का डेरा,
जिसके दरस मात्र से मिटता जनम जनम का फेरा ।
भारत का यह स्वर्णमुकुट है क्या तेरी जागीर ।
न देंगे एक इंच कश्मीर न देंगे एक इंच कश्मीर ।।



इन्दिरा गांधी नहर

इन्दिरा गांधी नहर हमारी कितनी सुखद सुहानी है।
तप्त तृषित वसुधा को सरसाने की नई कहानी है ।।
मथुरा काशी वृन्दावन सी हरित छटा बिखराएगी,
धन जन से परिपूर्ण मरूस्थल कर शोभा सरसाएगी ।
गंगा सी पावन सलिला यह शीतल है वरदानी है।।
इन्दिरा गांधी नहर हमारी कितनी सुखद सुहानी है।।
हरिके बैराज से चलकर यह तलवाड़ा पग लाती है,
पावन कर लक्खूवाली को हनुमानगढ़ आती है ।
विजयनगर सूरतगढी सीची बिरधवाल दी पानी है।।
इन्दिरा गांधी नहर हमारी कितनी सुखद सुहानी है ।।
छत्तरगढ बज्जू तरस्या था भीखमपुर भी प्यासा था,
ग्राम नाचना मोहनगढ भी जल के लिए उदासा था ।
जीवनदान दिया इन सबको फसल हुई मनमानी है ।।
इन्दिरा गांधी नहर हमारी कितनी सुखद सुहानी है।।
बढी रामगढ़ से भी आगे गडरा रोड में डेरा है,
जैसलमेर जोधपुर का भी किस्मत इसने फेरा है ।
तृषावन्त थी तृप्त हो गई धरती रेगिस्तानी है।।
इन्दिरा गांधी नहर हमारी कितनी सुखद सुहानी है ।।



नववर्ष

हम सभी को सुमंगल ये नववर्ष हो,
नित नए गीत सबको सुनाता रहे ।
फूल ऐसे खिले अपने उद्यान में,
निज सुरभि से जो सबको लुभाता रहे ।
घर में रूनझुन रहे पग पजेपयजनी,
बीन के तार सब एक धुन में बजे ।
चॉदनी चॉद से मुस्कराती हुई,
सर्वदा चॉद की गोद मे ही सजे ।
गुनगुनाता रहे ये धरा आसमॉ,
आइना आइना गुनगुनाता रहे ।।
हम सभी को सुमंगल ये नवार्ष हो ।।

सार्वभौमिक बने अपनी सवेदना
एक परिवार सा विश्व सारा लगे ।
आपसी दर्द को बांट कर कम करे,
हर सुमन को परस्पर सहारा लगे ।
तट यमुन रास राधा की रचती रहे,
श्याम बन्सी मधुर धुन सुनाता रहे ।।
यह संवरती रहे शस्य श्यामल धरा,
इसकी अक्षय छटा लहलहाती रहे ।
भाल उन्नत हिमालय रहे सर्वदा,
गंग की धार कलकल सुनाती रहे ।
फागुनी कूक कोयल रहे कूकती,
पी कहां धुन पपइया सुनाता रहे ।।
हम सभी को सुमंगल ये नववर्ष हो ।।

हर गली में अमन चैन क्रीडा करे,
सबमें बन्धुत्व का प्यार का जागरण ।
हर नयन नेह से मुस्कराते रहे,
इस धरा पर रमे प्रेम वातावरण ।
छोड़ निज स्वार्थ परमार्थ हो प्रस्फुटित,
भाव समता का सबको सुहाता रहे ।।
हम सभी को सुमगल ये नववर्ष हो ।।

•

मुक्तक

हर हँसी इकसार की नहीं होती,
हर हँसी यार की नहीं होती ।
हँसी–हँसी मे फर्क होता है,
हर हँसी प्यार की नहीं होती ।

•

हम तो आग बुझाते हैं

आग लगाना हमे न भाया, हम तो आग बुझाते है ।
नमक घाव पर नहीं लगाते मरहम नेह लगाते है।।

हमने स्वागत करना सीखा सुमन से रोली मोली से,
तुम तो भाषा एक जानते खेल खेलना गोली से ।
अमन चैन के पथिक रहे हम सबको यही सुझाते हैं ।।
आग लगाना हमें न भाया हम तो आग बुझाते है ।।

औरों से छेडाछाडी हम कुत्सित काम समझते है,,
सीमा पर आतक मचाकर नाहक आप उलझते हैं।
हम मानव हैं मानवता का जग को पाठ पढाते हैं ।।
आग लगाना हमें न भाया हम तो आग बुझाते हैं ।।

नहीं समस्या हल होती है बारूदी अंगारों से,
नहीं अमन की राग निकलती है आयुध भण्डारों से ।
जो विनाश के हेतु बने हैं वह तो प्रलय मचाते है ।।
आग लगाना हमें न भाया हम तो आग बुझाते हैं ।।

तुम विनाश की राह छोडकर सीमा पर मत घात करो,
आपस मे मिल बैठ परस्पर अमन चैन की बात करो ।
एक कदम तुम बढो मित्रवत हम दो कदम बढाते हैं ।।
आग लगाना हमे न भाया हम तो आग बुझाते हैं ।।

प्रेम का खज़ाना

पीर आंखों से चुराने को बहाना चाहिये,
टूटे दिल को जोड दे वह गीत गाना चाहिये ।

आज नैतिकता मोहब्बत में गिरावट आ गई,
बस्तियाँ सद्भावना की अब बसाना चाहिये ।

मन्दिरों औ मस्जिदों में देश को क्यों बॉटते,
बीन के हर तार में इक सा तराना चाहिये ।

क्यों हो अनबन परस्पर औ क्यो रहे रूसवाइयॉ,
हर जिगर में प्रेम का अक्षय खजाना चाहिये ।

सरहदें अपनीं बढाने की तमन्ना है नहीं,
हो सके तो सरहदों को ही मिटाना चाहिये ।

मंजिलें हैं एक सबकी रास्ते बस हैं जुदा,
बस यही बारीकियॉ अन्दर बसाना चाहिये ।

कौन कहता है हमारी दूरियॉ हैं बढ रही,
शक जिसे है उसको बीकानेर आना चाहिये ।



दहेज कम था

यह मत पूछो खड़ा कहां मैं जाने कैसा कोर है ।
एक तरफ क्रन्दन स्वर गूँजे एक तरफ कुछ शोर है ।।
एक लाख की बात हुई थी कार साथ में आनी थी,
मिलन जुलन की बेला में बस बीस हजार गिनानी थी ।
पिता लाख बस दे पाया था बन्धक में घर रख अपना,
जैसे-तैसे संकट सह कर पूरा कर पाया सपना ।
आश्वासन था बाकी का भी इन्तजाम मैं कर दूगा,
भाई की पाती आई थी सारा कर्जा भर दूंगा ।
मानवता की खाल ओढ़ कर दानवता चहुँ ओर है ।।
यह मत पूछो........................ . . .. ।।

कहा किसी ने आकर मुझसे डोली अभी सजाई है,
लाले के घर से लाली की होकर चली विदाई है ।
कल की है बात कि डोली श्यामू के घर आई थी,
रिश्ते नातेदारों के संग खूब बजी शहनाई थी ।
आज हो गया गजब कि कल की लाली जल कर खाक हुई,
छुई-मुई सी सहम गये सब सारी प्रकृति अवाक हुई ।
लाली की माँ बात सुनी तो चली सरग की ओर है ।।
यह मत पूछो............ .... ।।

आत्म दाह का केस बन गया ऐसी रपट सुनाई है,
सत्य सनातन दफन हो गया माया रंग दिखाई है ।
परिजन को तो स्वतः अन्ततः संस्कार करवाना था,
लाली के लीला का सारा स्वर्णिम खेल मिटाना था ।
गली-गली में कानाफूसी यह हत्य' की बात है,
नर होकर नारायण नें दी नर पिशाच को मात है ।
दुष्ट जनों के दुष्कर्मो का किसने पाया छोर है ।।
यह मत पूछो.. ।।

कवि क्यों बैठा मौन आज इस अत्याचारी वेला में,
कहाँ खो गये भाव तुम्हारे तुम खोये किस मेला में ।
क्या कुण्ठित हो गई कलम है रहा न कोई जोश है,
ऐसा वातावरण बना है फिर भी तू वेहोश है ।
क्या उत्तरदायित्व न तेरा इन प्राणों की होली में,
क्या भूषण के भाव नहीं है आज तुम्हारी बोली मे ।
जब भी कलम क्रुद्ध होती है बनती बारह बोर है ।।
यह मत पूछो.. ।।

नारी बली चढेगी जब तक आग लगे इस जीने से,
नाम दहेज मिटा दो अपने शब्द कोष के सीने से ।
रोम–रोम मे मन्त्र फूंक दोकण–कण से आवाज हो,
युवा वर्ग आगे आये झेले जो भी तूफान हो ।
जैसी उपलब्धी होती न्यौछावर करना पडता है,
नव इतिहास बनाने में कुछ को तो मरना पडता है ।
काली रात छंटेगी निश्चित आने वाला भोर है ।।
यह मत पूछो.. ।।

•

मुक्तक

मस्त रहता है भले गम शुदा होता है ।
उसकी मेहर हो तो कोई न जुदा होता है ।
जब कोई किश्ती आ के बीच भँवर फँस जाती है,
नाखुदा हौसला खोता तो खुदा होता है ।

•

चार दिनों का मेला

चार दिनों का मेला सारा अरूणाई–तरूणाई है ।
जब–जब समय पैतरे बदले करूणा है करूणाई है ।

कभी उजाला तमस भगाये कभी तमस उजियाले को,
सभी प्रतीक्षा में रहते हैं अपने अपने पाले को ।
शाश्वत भागमभाग यहाँ बस दो पल की पहुनाई है ।।
चार दिनों का मेला सारा .... ।।

लूट–पाट, छीना–झपटी कर अपना घर भर डाला है,
दया धर्म विश्वास कैद है लगा असत का ताला है ।
धन–वैभव के चकाचौंध की बजी यहाँ शहनाई है ।।
चार दिनों का मेला सारा .... ।।

शैशव बालपना बीता तो मस्ती भरी जवानी है,
वृद्धापन फिर खेल खत्म जीवन की यही कहानी है ।
यौवन मद मे लिप्त मनुज को माया नें भरमाई है ।।
चार दिनो का मेला सारा .... ।।

काम मद लोभ सभी ने जम कर सबको लूटा है,
रेल यहाँ से छूट गई तब जाकर के भ्रम टूटा है ।
गफलत–गफलत में रह अपनी सारी उमर गंवाई है ।।
चार दिनों का मेला सारा .... ।।

अभी समय है गुरू चरण रहकर उनका ध्यान करो,
तन–मन–धन सब करो समर्पित उनका ही गुनगान करो ।
जो गुरू चरण शरण में आया गुरू ने पार लगाई है ।।
चार दिनों का मेला सारा .... ।।



किसको लेकर साथ चलूँ

किसको लेकर साथ चलूँ मैं समझ नहीं कुछ आये ।
जो भी साथ चले लघुकालिक स्वतः छूटता जाये ।।

बाग कल्पनाओं के रोपा खूब उन्हें सरसाया,
नेह नीर से परिप्लावित कर पुलकाया हर्षाया ।
खिले फूल जो आज बाग में वह भी कल मुरझाये ।।
किसको लेकर साथ चलूँ .... ।।

रिश्ते–नाते सब कुछ देखे सब कहने की बातें,
अपनें अपनें अवसर लगते सब करते है घाते ।
अपना ही शरीर श्वाँसें अन्तरा पल्ला झडकाये ।।
किसको लेकर साथ चलूँ .... ।।

एक समय ऐसा आया जब हम हो गये अकेले,
छूट गये सब भव सुख आदिक पास रहे ना धेले ।
यहाँ नियति की नियति यही है कौन किसे समझाये ।।
किसको लेकर साथ चलूँ .... ।।

केवल गुरू का एक आसरा सदग्रन्थों नें गाया,
जो उन पर हो गया निछावर गुरू ने गले लगाया ।
केवल गुरू की ही सत्ता बस भव से पार लगाये ।।
किसको लेकर साथ चलूँ .... ।।



मैने सारी आद्योपांत पढी, बडा ही आनन्द आया। गिरिजेश जी अपने कर्म के प्रति निष्ठावान है। बडे ही व्यवस्थित ढंग से अपनी काव्यगत भावनाएं व्यक्त की हैं। सारी रचनायें सशक्त, भावपूर्ण एवं पठनीय है। उनकी शक्ति और भी बढ जाती यदि कवि वर्तमान जीवन की यथार्थता से तनिक से गहराई देख पाता। गांवो की निर्धनता और किसानो की दुर्दशा के चित्र व शहरो की विसंगतियां कवि से और भी अपेक्षायें रखती हैं। आशा है गिरिजेश जी इधर भी दृष्टिपात करेगे, जो कि, इनके लिए दु:साध्य नही है।

अर्थ गाभीर्य के कारण कवि थोडे मे बहुत कुछ कहने मे निष्णात है। वह न तो तर्क घडता है और न शब्द बाहुल्य का शिकार होता है। उसके लिए कम से कम शब्दो मे अधिक कहना चातुर्य है, शेष सब सतही ही है।

कवि की शक्ति जनजीवन है, चाहे वह आधुनिक हो या प्राचीन। खेत–खलिहानो की कवितायें बडी ही मीठी एव रसीली है। वीरो के चित्रण अत्यंत ओजपूर्ण तथा प्रेरणाप्रद है।

कवि का जीवन से मर्मस्पर्शी लगाव है। यही कारण है कि वह कभी भी अपने आस–पास की घटनाओ को अनदेखी कर मात्र कल्पना लोक मे विचरण करने का अभ्यस्त नहीं है।

आभा और रोली – सभी दृष्टियो से कवितायें तलस्पर्शी एव हृदयग्राही हैं।

–सत्यनारायण पारीक (12 4 99)